ISSN-2321-3981
सचित्र प्रेरक बाल मासिक
देवपुत्र
फाल्गुन २०७७
मार्च २०२१
₹२०
अवध में होली खेले रघुवीरा

कविता

इस बसंत के मौसम में

– रावेन्द्र कुमार रवि

फूलों ने इतिहास रचा है,
इस बसंत के मौसम में!
बालों में गुलाब की खुशबू,
गालों पर चंपा चहकी है!
गले चमेली पड़ी हुई है,
और चाँदनी भी महकी है!
फूलों ने मधुमास रचा है,
इस बसंत के मौसम में!

साँसों में भी फूल–फूलकर,
खुश होकर गाए हैं फूल!
कानों में भी झूल–झूलकर,
हर पल मुस्काए हैं फूल!
फूलों ने सब खास रचा है,
इस बसंत के मौसम में!
हरियाली की परी सजी है,
हमें रिझाने आई है!
हम भी चाहें सजी रहे यह,
इसकी आज सगाई है!
फूलों ने मधुहास रचा है,
इस बसंत के मौसम में!

– खटीमा
(उत्तराखण्ड)

चित्रांकन – शुभम् लखेरा (चंदेरी)

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

फाल्गुन २०७७ ▪ वर्ष ४१
मार्च २०२१ ▪ अंक ९

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
शशिकांत फड़के

मानद संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	२० रुपये
वार्षिक	:	१८० रुपये
त्रैवार्षिक	:	५०० रुपये
पंचवार्षिक	:	७५० रुपये
आजीवन	:	१४०० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१३० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया–बहिनो!

रंगों का मेला लिये आपका प्यारा त्यौहार होली एक बार फिर आ रहा है। कोरोना की आहट से पिछली होली तो कुछ फीकी–फीकी रही इसलिए इस बार आपका उत्साह भी दुगुना होगा।

होली हमारा बहुत प्राचीन एवं धार्मिक, सांस्कृतिक, और प्राकृतिक पर्व है। भक्त प्रह्लाद की साहस, रोमांच एवं भक्ति भाव से भरी कथा से होली पर्व का आरंभ माना जाता है। **'प्रह्लाद'** जिसके कारण होली आरंभ हुई अन्याय के विरुद्ध अटल रहने वाले ऐसे वीर बालक थे जो राक्षस कुल में जन्म लेकर भी देवर्षि नारद से उत्तम संस्कार ग्रहण कर **'देवपुत्र'** बन गए।

वृन्दावन के राजकुमार श्रीकृष्ण की गोप–गोपियों के साथ मनाई जाने वाली होली भी बहुत प्रसिद्ध है। आज भी ब्रज मण्डल की होली विश्व प्रसिद्ध है। प्रह्लाद की कथा सतयुग की है और कृष्ण की द्वापर युग की लेकिन क्या आप जानते हैं इनके बीच आने वाले त्रेतायुग में भगवान राम ने भी होली खेली है। इस बार के **'देवपुत्र'** के आवरण पर वही दृश्य चित्रित है।

रामलला अपने भाइयों लखनलाल, भरत भैया और अनुज शत्रुघ्न कुमार सहित अयोध्या के राजभवन की वाटिका में केसर, कस्तूरी व टेसू के रंगों, सुगंधित गुलाल तथा फूलों के पराग से बने अबीर से बाल सखाओं के साथ आनंद पूर्वक होली खेलते थे। ***'होली खेले रघुवीरा अवध में होली खेले रघुवीरा'*** यह लोकगीत जो बाद में फिल्मी गीत भी बना आपने अवश्य ही सुना होगा। यह अवध में रामलला की होली का ही वर्णन है।

होली मची हुई है भारी दशरथ जी के धाम,
भरत शत्रुघ्न लखन लाल संग रंग खेलते राम।
घुली हुई केसर कस्तूरी सोने की पिचकारी,
रामरंग में रंगी अयोध्या खेले अवधबिहारी।

अब रही बात वर्तमान युग कलियुग की तो इसके तो राम–लखन भी आप हैं और बालकृष्ण भी। प्रकृति के इस रंगपर्व को प्राकृतिक रंगों से मनाइए साथ ही प्रकृति की सुन्दर सौगातों को नष्ट होने से भी बचाइए। ऋतुराज बसंत सृजन का संदेश लाता है इसी ऋतु में आने वाला होली प्रकृति का पर्व है अत: प्रकृति को हानि पहुँचाकर मनाना एक प्रकार से इस पर्व की मूल भावना के साथ अन्याय होगा। इसलिए होली मनाइए पर पर्यावरण भी बचाइए और अपनी इस सांस्कृतिक परम्परा को आगे बढ़ाइए। रंगमहोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएँ।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

।। अनुक्रमणिका ।।

कहानी

- बसंत का जादू - इंजी. आशा शर्मा ०५
- चिंकी की होली -डॉ. देशबंधु शाहजहाँपुरी १०
- कौए ने खाए महुए - आशीष श्रीवास्तव १६
- टॉफी का पेड़ - नीलम राकेश १९
- पारितोषिक - अनुपमा अनुश्री ३२
- गदहे की सूझबूझ - तपेश भौमिक ३८
- विनाशाय च दुष्कृताम् - आनंदमिश्र 'अभय' ४२
- गीदड़ की सरदारी - नफेसिंह कायदान ४८

छोटी कहानी

- गम्बो जम्बो की.... - अनुरूपा चौघुले ०७
- लौट आई गौरैया - किशनलाल शर्मा ३१
- खाने वाले फूल - शिखरचन्द जैन ४१

लोककथा

- सेठजी की सलाह - रीता जैन ४४

बाल प्रस्तुति

- दृढ़ संकल्प - संदीप यादव २०

प्रसंग

- शहीद भगतसिंह की चतुराई - सांवलाराम नामा ३०
- निराले हैं कवियों के ढंग - डॉ. हनुमानप्रसाद 'उत्तम' ३६

लघुकथा

- गुब्बारे और पिचकारी - मीरा जैन ०६

कविता

- इस बसंत के मौसम में - रावेन्द्र कुमार 'रवि' ०२
- तितली - हेमंत कुमार मेहरा १८
- गिलहरी - पुखराज सोलंकी १८
- कोयल का गीत - शिवम् सिंह २१
- होली की बारात - डॉ. तारादत्त 'निर्विरोध' ५१

स्तंभ

- स्वयं बनें वैज्ञानिक - प्रो. राजीव ताम्बे १२
  - सुरेश कुलकर्णी
- विषय एक कल्पना अनेक:होली - डॉ. शेषपाल सिंह १४
  - रामफल तिवारी १४
  - सूर्य कुमार पाण्डेय १५
- देशविशेष - श्रीधर बर्वे २२
- यह देश है वीर जवानों का १६ ३४
- आपकी पाती ३५
- संस्कृति प्रश्नमाला ३६
- पुस्तक परिचय ४०
- बड़े लोगों के हास्य प्रसंग ४६
- छ: अंगुल मुस्कान ४७
- आओ ऐसे बनें - मदन गोपाल सिंघल ५०

आलेख

- होली : रंग एक रूप अनेक - पूनम पाण्डे ०८
- आदर्श पत्रकारिता के प्रतीक - डॉ. रामसिंह यादव २६

चित्रकथा

- होली है - देवांशु वत्स १३
- दौड़ - संकेत गोस्वामी २५
- क्या है ग्रहों के अंदर - संकेत गोस्वामी २९
- चूहों से छुटकारा - देवांशु वत्स ३७

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।

विवरण इस प्रकार है - खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टैट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** चालू खाता **(Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - "**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM** " आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

बसंत का जादू

– इंजी. आशा शर्मा

गर्मी पसीने–पसीने हो रही थी लेकिन फिर भी बहुत प्रसन्न दिखाई दे रही थी, वह प्रसन्न थी क्योंकि उसे घमंड था कि उसे बच्चे बहुत पसंद करते हैं। करें भी क्यों नहीं! परीक्षा के तनाव के बाद परीक्षा परिणाम की खुशी और अगली कक्षा में जाने का रोमांच... यह सब इन्हीं लंबी छुट्टियों में तो होता है।

इन छुट्टियों में कोई अपनी नानी–दादी से मिलने जाता है तो कोई नदी–पहाड़ घूमने। कोई इन दिनों ग्रीष्म शिविर (समर कैम्प) में मस्ती करता है तो कोई अपना मनपसंद शौक पूरा करता है। इसके अलावा आइसक्रीम, कुल्फी और शेक शर्बत भी जी भर के उड़ाये जाते हैं। गर्मी फूलकर कुप्पा हुई जा रही थी तभी लबादा ओढ़े थर–थर काँपते हुए सर्दी आई।

''क्या बात है गर्मी! बहुत प्रसन्न दिखाई दे रही हो?'' सर्दी ने अपने किटकिटाते हुए दाँत किसी तरह रोककर पूछा।

''अपने तो मजे ही मजे हैं। देखो न! मेरे आते ही बच्चे कितने प्रसन्न हो जाते हैं। वर्ष भर मेरे आने की प्रतीक्षा करते हैं। क्या ये प्रसन्न होने वाली बात नहीं?'' गर्मी ने इठलाकर कहा।

''इतना खुश होने की भी आवश्यकता नहीं है। बच्चे तो मुझे भी बहुत प्यार करते हैं। बरसात में छप–छप करके नहाना.. पानी में कागज की नाव तैराना... कितना मजा करते हैं और पिकनिक के लिए भी बच्चे मेरे आने की प्रतीक्षा करते हैं।'' बरसात ने गर्मी की बात बीच में ही काट दी। गर्मी ने उसकी तरफ देखकर अपना मुँह सिकोड़ लिया। उसे बरसात की ये बात बिल्कुल भी पसंद नहीं आई।

''हालाँकि मैं अपने मुँह मियां मिट्ठू नहीं बन रही लेकिन बच्चे मुझे भी कुछ कम पसंद नहीं करते। कितनी ही ऐसी मस्तियाँ हैं जो बच्चे केवल मेरे ही मौसम में कर पाते हैं। नए वर्ष की तैयारियाँ और संक्रांति का त्यौहार कैसे भूल रही हो तुम लोग।'' सर्दी ने कहा तो गर्मी और बरसात चुप हो गईं। तभी सबने देखा कि पतझड़ रोती सुबकती हुई चली आ रही है।

''अरे! तुम्हें क्या हुआ? और तुम्हारे वो हरे–भरे पत्ते कहाँ गये? क्या तुम्हारे यहाँ कोई चोरी–डकैती हुई है?'' तीनों एक साथ बोलीं।

''ऐसा ही कुछ समझो। कल शाम अचानक तेज हवाएँ चलने लगी और मेरे हरे–भरे पत्ते झड़ गये। मैं बिलकुल ठूंठ हो गई।'' पतझड़ ने कहा।

''कोई बात नहीं! वैसे भी बच्चे तुम्हें कम ही पसंद करते हैं। क्योंकि तुम अपने साथ वार्षिक परीक्षा जो लेकर आती हो। बेचारे बच्चे तनाव में घिर जाते हैं।'' गर्मी ने कहा तो पतझड़ फिर रोने लगी।

तीनों ऋतुएँ उसे दिलासा देने लगी लेकिन पतझड़ का अपने झड़े हुए पत्तों के लिए रोना बंद नहीं हुआ। तभी

हँसता खिलखिलाता हुआ बसंत वहाँ आया। उसके पीले कपड़े और फूलों वाली माला बहुत सुंदर लग रही थी। गर्मी, सर्दी और बरसात उसे एकटक देखने लगी। पतझड़ भी अपना रोना भूलकर उसकी सुन्दरता को देखने लगी।

''क्या हुआ? तुम सब लोग मुझे ऐसे क्यों देख रही हो? मैं तुम्हारी सहेली बसंत हूँ।'' बसंत खिलखिलाई।

''तुम कितनी प्यारी लग रही हो। हमेशा मुस्कुराती रहती हो। जहाँ भी जाती हो, सब खुश हो जाते हैं। केवल बच्चे ही नहीं बल्कि बड़े भी।'' पतझड़ तनिक सी मुस्कराई। ''मुझे मुस्कुराना अच्छा लगता है। मैं हँसती हूँ तो मेरे साथ पूरी दुनिया हँसती है लेकिन तुम इतनी उदास क्यों हो? आओ मेरे साथ। वहाँ खेलने चलते हैं उन बच्चों के पास बसंत ने पतझड़ का हाथ पकड़कर कहा।

''नहीं! मैं ऐसे नहीं चल सकती। देखती नहीं, मेरे शरीर पर पत्ते नहीं हैं।'' पतझड़ ने लज्जित होते हुए कहा। उसे देखकर गर्मी, बरसात और सर्दी मुँह छिपा कर हँसने लगी। बसंत को उन तीनों की ये प्रतिक्रिया बिल्कुल भी अच्छी नहीं लगी। वह मुस्कुराती हुई पतझड़ को गले से लगाकर उसके आँसू पौंछने लगी।

''बस! इतनी सी बात? ये लो।'' कहते हुए बसंत ने हरे–हरे कोमल पत्ते पतझड़ के शरीर पर सजाने शुरू कर दिए। देखते ही देखते पतझड़ फिर से हरी–भरी हो गई। उसने बसंत को धन्यवाद दिया। ''खुशियाँ बाँटने से प्रसन्नता बढ़ती हैं कम नहीं होती।'' बसंत ने बाकी तीनों ऋतुओं की ओर देखते हुए कहा। वे भी अब लज्जित लग रही थीं। ''तुम्हारे इसी सरल और मीठे स्वभाव के कारण तुम सबको प्रिय हो।'' पतझड़ ने कहा तो बाकी सब ने भी उसकी हाँ में हाँ मिलाई। बसंत खिलखिलाते हुए बच्चों के साथ खेलने चल दी।

– बीकानेर (राजस्थान)

लघुकथा

गुब्बारे और पिचकारी

– मीरा जैन

कुछ घंटे पूर्व रंगों से भरे गुब्बारे स्वयं की भाग्य पर इठलाते हुए अकेली पड़ी पिचकारी को अत्यंत हेय दृष्टि से देख मन ही मन मुस्कुरा रहे थे– ''कहाँ हम गोलमोल सुंदर रंगों से भरे नरम गुब्बारे कहाँ ये पतली सी सौंदर्यहीन पिचकारी हमारा और उसका भला क्या मुकाबला?''

किन्तु देखते ही देखते कुछ ही समय में ही सारे गुब्बारे चिथड़े–चिथड़े हो जमीन में बिखर अपने अभिमान पर आँसू बहाते हुए पिचकारी को ईर्ष्या की दृष्टि से देख रहे थे क्योंकि वह अपना कर्त्तव्य निर्वहन करते हुए ज्यों कि त्यों थी अपनी दशा से व्यथित एक गुब्बारे ने पिचकारी से प्रश्न किया–

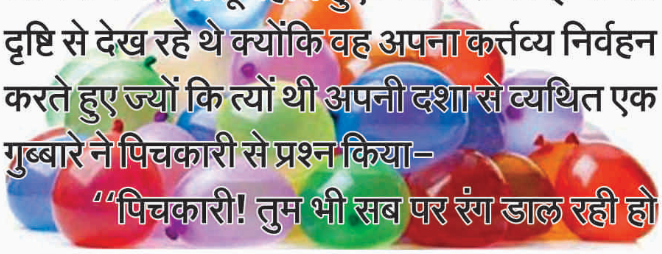

''पिचकारी! तुम भी सब पर रंग डाल रही हो लेकिन बिल्कुल वैसी की वैसी ही नजर आ रही हो जैसे पहले थी इतना ही नहीं तुम सब पर रंग डाल रही हो फिर भी कोई लड़ाई–झगड़ा, विवाद नहीं कर रहा है हम जिन पर भी रंग डालते वह लड़ाई–झगड़े पर उतारू हो जाता ऐसा क्यों?''

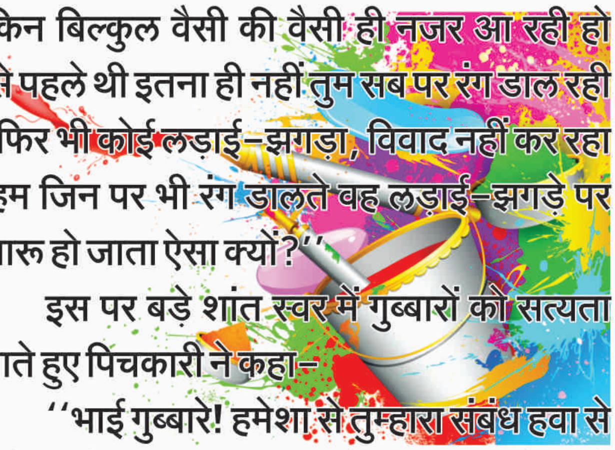

इस पर बड़े शांत स्वर में गुब्बारों को सत्यता बताते हुए पिचकारी ने कहा–

''भाई गुब्बारे! हमेशा से तुम्हारा संबंध हवा से रह है हवा में उड़ना तुम्हारा पुश्तैनी व्यवसाय है तुमने नाहक ही रंगीन पानी में अपने पाँव पसारे, मेरा तो एकमात्र काम ही रंग डालना है इसीलिए कोई बुरा भी नहीं मानता है ना ही मुझसे कोई रूठता है, भाई ये दुनिया का नियम है कि जब भी कोई अपना क्षेत्र छोड़कर दूसरे के क्षेत्र में अतिक्रमण करता है उसे मुँह की खानी ही पड़ती है।

– उज्जैन (म. प्र.)

कहानी

गम्बो जम्बो की पिचकारी

– अनुरूपा चौघुळे

होली के दिन पास ही थे। किट्टू बंदर के मस्तिष्क में उथल–पुथल मच रही थी। इस बार होली कैसे खेली जाए? बहुत सिर खुजलाया, आखिर विचार आ ही गया। प्रसन्नता से उछलते–कूदते जंगल के सब जानवरों को इकट्ठा किया और पूछा– ''मेरे साथियो! क्यों न इस बार होली रंगों और पिचकारियों से खेली जाए?''

कोई कुछ बोलता इसके पहले ही नन्ही सी गिलहरी बोल पड़ी– ''अरे किट्टू भैया! हमारे पास भला रंग और पिचकारियाँ कहाँ हैं?''

''इसीलिए तो हम हर साल धूल, पानी, कीचड़ से होली खेलते हैं।'' भालू ने हँसते हुए कहा।

''आप लोग इसकी चिंता न करें। वह जिम्मेदारी मेरी। मैं शहर जाकर ढेर सारी पिचकारियाँ और रंग खरीद लाता हूँ।आप सब अपनी पसंद की पिचकारी ले लेना।'' किट्टू बंदर किलकते हुए बोला। झटपट शहर गया और जंगल के बीचो–बीच रंगबिरंगी पिचकारियों की दुकान ही सजा ली किट्टू ने। रंग भी लाना नहीं भूला। एक–एक कर जंगल के सारे जानवर आने लगे। सब अपने–अपने हिसाब से छोटी–बड़ी पिचकारी खरीदने लगे। चूहे के लिए एकदम छोटी सी पिचकारी भी थी किट्टू की दुकान में। रंगों के तो कहने ही क्या। इन्द्रधनुषी रंगों ने सबका मन मोह लिया था।

शाम हो चली थी अंधेरा होने में था किट्टू की दुकान तो खाली हो गई थी। किट्टू अपने घर के लिए निकलने ही वाला था कि उसे गम्बो और जम्बो हाथी आते हुए दिखाई दिए। वे दोनों किट्टू से बोले किट्टू मामा हमें भी चाहिए पिचकारी। किट्टू बड़ी उलझन में पड़ गया था क्योंकि पिचकारियाँ तो समाप्त हो चुकी थीं। इन बच्चों को मना करना किट्टू को बड़ा ही मुश्किल लग रहा था लेकिन क्या करता? उदास होकर गम्बो और जम्बो घर लौट गए। उनकी माँ भी यह जानकर दुखी हो गई कि जंगल के सारे जानवर पिचकारियों और रंगों से होली खेलेंगे लेकिन उसके गम्बो और जम्बो नहीं खेल पाएंगे।

रात जब गम्बो जम्बो के पिताजी हाथी भीम घर आए

तो पाया कि बच्चे और उनकी माँ मुँह लटकाए उदास होकर बैठे थे। पूरी बात सुनते ही पिता भीम जोर से हँस पड़े बोले– ''अरे बस इतनी सी बात है?'' ''पिताजी! बात इतनी सी नहीं है, कल ही तो होली है। जंगल में सुबह होते ही होली आरंभ हो जाएगी और हम दोनों को घर में ही बैठे रहना पड़ेगा।'' गम्बो और जम्बो रूआँसे होकर बोले।

''अरे भाई! थोड़ा दिमाग लगाओ। भगवान ने तुम्हें पहले से ही पिचकारी दे रखी है। तुम्हें और किसी पिचकारी की आवश्यकता ही नहीं है।'' हाथी भीम ने कहा।

''अच्छा! कहाँ है पिचकारी?'' गम्बो और जम्बो ने हैरानी से पूछा।

हाथी भीम ने मुस्कुराते हुए अपनी सूँड से दोनों की सूँड को छूते हुए कहा– ''ये रही तुम्हारी पिचकारियाँ।''

गम्बो जम्बो की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। दूसरे दिन जंगल में सबके बीच पहुँचे तो देखा कि एक बहुत बड़े से गड्ढे में पानी में रंगों का घोल बनाकर सब जानवर अपनी–अपनी पिचकारियाँ रंग के पानी से भरकर एक–दूसरे को भिगो रहे थे। बड़ी ही मस्ती चल रही थी। अब तो गम्बो–जम्बो को भी जोश आ गया। दोनों ने अपनी सूँड में रंग भरा और एक के बाद एक सबको रंगों से तरबतर करने लगे। सबको खूब मजा आया। सब एक साथ बोल पड़े– ''सबसे न्यारी, सबसे प्यारी गम्बो–जम्बो की पिचकारी।

– इन्दौर (म. प्र.)

होली : रंग एक रूप अनेक

– पूनम पाण्डे

होली जीवन को खुले रूप में खिलखिलाकर जीने का त्यौहार है। भारत वर्ष में मनाये जाने वाले प्रमुख पर्वों में होली का अपना अलग ही स्थान है। पीली–पीली सरसों अपनी मनमोहक छटा बिखेरती है। केसर के बाग महकने लगते हैं। सर्दी के तेवर कुछ कम हो जाते हैं। कुल मिलाकर सारा माहौल रंगीन और हल्का–फुल्का सा लगने लगता है। ऐसे में नर–नारी, बड़े–बूढ़े, बच्चे, युवक–युवतियों द्वारा होली के पर्व का आनन्द लिया जाता है।

अधिकांश लोग यह समझते हैं कि होली का त्यौहार केवल भारत वर्ष में ही मनाया जाता है। परन्तु वास्तविकता तो यह है कि होली एक सार्वभौमिक त्यौहार है। विश्व के लगभग सभी देशों में इसे भिन्न–भिन्न रूपों में मनाया जाता है।

जर्मनी में भारत वर्ष की ही भाँति इस दिन लकड़ी जलाकर आग लगायी जाती है। स्त्री–पुरुष बच्चे सभी आग के चारों ओर नृत्य करते हैं व गीला तथा सूखा रंग एक–दूसरे पर छिड़कते हैं।

मिस्र देश में हर वर्ष अप्रैल माह में होली का त्यौहार बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। आधी रात के समय लोग अपने फटे–पुराने वस्त्रों को आग में जलाते हैं व प्रातःकाल तक आग के समीप गाते व नाचते हैं।

बर्मा के नागरिक रंग व पिचकारी से होली खेलते हैं। इस दिन यहाँ पर सार्वजनिक अवकाश रखा जाता है। बर्मा के लोग होली को **'प्यूला'** के नाम से पुकारते हैं।

पोलैण्ड में होली को **'आरशिना'** कहा जाता है। शायद यही एकमात्र ऐसा देश है जहाँ विशुद्ध प्राकृतिक रंगों से होली खेली जाती है। होली से लगभग एक माह पूर्व ही फूल व वनस्पतियाँ ढूँढ़ कर रंग बनाना प्रारम्भ हो जाता है। टोलियाँ बनाकर लोग एक–दूसरे पर रंग डालते हैं।

नेपाल, श्रीलंका, मलेशिया आदि देशों में होली विशुद्ध भारतीय ढंग से मनायी जाती है। एक दिन पूर्व होलिका दहन व होली के दिन दुपहर तक रंग–बिरंगा आनन्द तथा शाम को होली मिलन।

चीन में होली बड़े ही परम्परागत ढ़ंग से मनायी जाती है। लगभग १५ दिन तक नर–नारी इस त्यौहार का आनन्द लेते हैं। चीन में होली को **'च्वेंजे'** के नाम से जाना जाता है। चीन में यह पर्व सभी नागरिकों के लिए आकर्षण का केन्द्र होता है।

इस प्रकार अलग–अलग अंदाज में सारा विश्व फागुन के सौन्दर्य का मजा लूटता है और मजा भी क्यों न लिया जाये? आखिर हम भी तो प्रकृति के ही अंग हैं। जब वह अपने आपको दुहराती हुई पुनः युवा होकर मुस्कुराती है, थिरकती है।

भारत में मथुरा–वृन्दावन एवं बनारस की होली विश्वविख्यात है।

इन दिनों देश–विदेश के पर्यटक खासतौर पर बनारस व मथुरा की रंगीली होली का आनन्द लेने भारत आते हैं तथा अबीर–गुलाल जैसी रंग–बिरंगी यादें लेकर स्वदेश लौटते हैं।

– अजमेर (राजस्थान)

पिचकारी जोड़ो

– राजेश गुजर

बच्चो, नीचे ९ चौकोर खानों में रंगों की ८ पिचकारी बनी हैं जो अस्त–व्यस्त दिख रही हैं। इन्हें सही क्रम में जोड़ना है। कौन सा चौकोर खाना कहाँ बैठेगा ऐसा करो। (उत्तर इसी अंक में।)

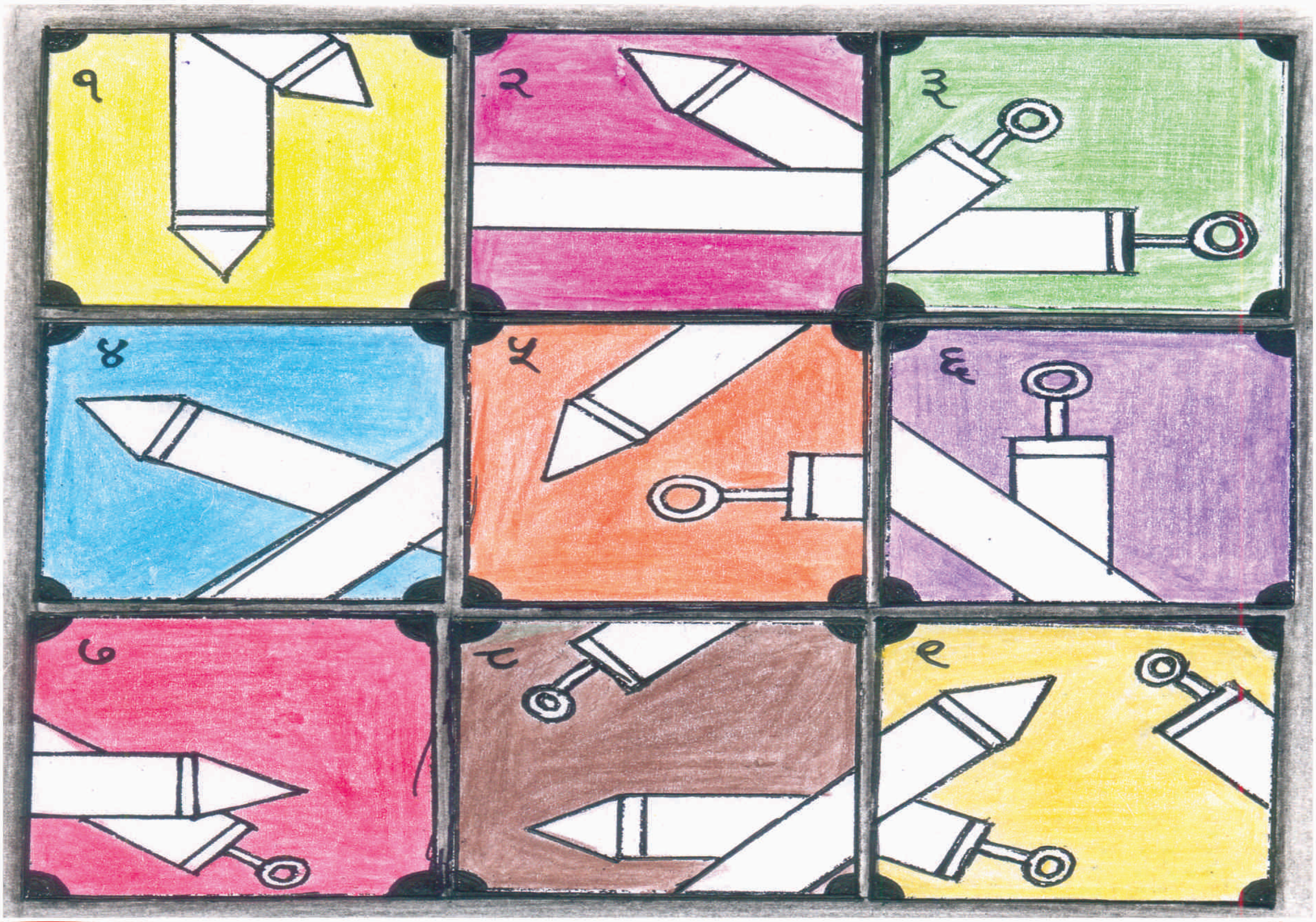

चिंकी की होली

– डॉ. देशबन्धु 'शाहजहाँपुरी'

उस दिन जब रिंकी बालकनी में रखे गमलों में पानी डालने गई, तो अचानक उसकी नजर मनी प्लाँट घनी बेल वाले गमले में पड़ी। उसने देखा कि एक भूरे रंग की चिड़िया गमले में बैठी है। जैसे ही रिंकी पास आई, चिड़िया उड़कर सामने बिजली के तार पर जाकर बैठ गई। चिड़िया के उड़ते ही रिंकी ने देखा कि चिड़िया ने उस गमले में सूखे तिनकों को इकट्ठा किया है। शायद वह उसमें घोंसला बना रही थी। यह देखकर उसने सभी गमलों में पानी डाला, लेकिन उसे छोड़ दिया। उसे लग रहा था कि उसके पानी डालने से कहीं उसका अधूरा बना घोंसला नष्ट न हो जाए।

बालकनी से नीचे उतरकर उसने यह बात अपनी माँ को बताई। उसकी बात सुनकर माँ भी उसके साथ बालकनी में आई। साथ में उसकी छोटी बहन चिंकी भी माँ के साथ आ गई। उन्होंने देखा कि चिड़िया फिर से वापस उसी गमले में आकर बैठ गई है। यह देखकर माँ ने कहा, ''यह तो सच में अपना घोंसला बना रही है। शायद उसके बाद यह उसमें अंडे देगी। तुम एक छोटी कटोरी में पानी और दूसरी कटोरी में थोड़े से चावल लाकर यहाँ रख दो। इससे इस चिड़िया को अपना भोजन ढूँढने दूर नहीं जाना पड़ेगा।''

माँ की बात सुनकर रिंकी दौड़ी–दौड़ी नीचे गई, और एक कटोरी में पानी और दूसरी कटोरी में चावल लेकर उसे बालकनी में गमले के पास रख दिया।

कुछ दिन के बाद वास्तव में उस चिड़िया ने उस गमले में दो छोटे–छोटे अंडे दिए। अंडे दूध जैसे सफेद थे। रिंकी ने देखा कि अब चिड़िया उसके पास आने के बाद भी नहीं उड़ती थी। अंडों के ऊपर ही बैठी रहती थी। संभवत: उसे पता चला गया था कि उसे अब यहाँ से कोई नहीं भगाएगा।

इसी बीच होली का त्यौहार आ गया। नन्हीं चिंकी पिताजी के साथ बाजार से एक नन्ही सी पिचकारी और रंग खरीदकर लाई। उसे पिचकारी से रंग खेलना बहुत अच्छा लगता था। लेकिन उसकी एक गंदी आदत भी थी। वह न केवल दूसरों को पिचकारी से रंगती थी, बल्कि दीवारों को भी पिचकारी के रंग से रंग देती थी। पिछले साल तो उसने रसोईघर में माँ के साथ गुझिया और अन्य पकवान बना रही रिंकी को रंगने के लिए रसोईघर में पिचकारी से रंग बरसाना शुरू कर दिया था। थोड़ा सा रंग गुझिया बनाने वाले मसाले में भी पड़ गया था। यह देखकर माँ को बहुत क्रोध आया था। वह उसे पीटने के लिए उसके पीछे दौड़ी, लेकिन चिंकी भागकर दादी की गोद में छुप गई। फिर दादी ने उसे समझाया था कि रंग तो दूसरों के ऊपर डालने के लिए होता है। घर की दीवारों या खाने–पीने की वस्तुओं में रंग पड़ जाने से बहुत हानि होती है, और वस्तुएँ भी खराब हो जातीं हैं। दादी की बातें सुनकर चिंकी ने दादी से कहा था कि अब वह इस प्रकार की गलती नहीं करेगी।

होली वाले दिन दादा जी ने चिंकी के लिए एक बाल्टी में रंग घोलकर बालकनी में रखकर चिंकी से कहा– ''देखो, यहीं बालकनी से ही रंग खेलना। बाहर मत जाना और हाँ, दीवारों पर भी पिचकारी नहीं चलानी है।''

''जी दादा जी, मैं यहीं बालकनी से ही रंग खेलूँगी। और दीवारों को भी गंदा नहीं करूँगी।'' चिंकी ने बाल्टी में से अपनी पिचकारी में रंग भरते हुए कहा। जो भी चिंकी की बालकनी के नीचे से निकलता, चिंकी की

पिचकारी की धार से रंग से सराबोर हो जाता। उसे होली खेलने में खूब मजा आ रहा था।

रंग खेलते–खेलते दोपहर हो गई थी। अब सड़क पर लोगों का निकलना भी कम हो गया था। चिंकी की बाल्टी में अभी थोड़ा रंग बचा हुआ था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि अब वह किसको रंगे? अभी वह सोच ही रही थी कि अचानक उसकी नजर गमले में बैठी चिड़िया पर पड़ी। उसे देखकर चिंकी के चेहरे पर मुस्कान फैल गई। उसने मन ही मन बचे हुए रंग से चिड़िया को रंगने की योजना बना ली थी।

उसने अपनी पिचकारी में रंग भरा और गमले में बैठी चिड़िया पर उड़ेल दिया। चिड़िया रंग से पूरी तरह से नहा गई थी। उसने तेजी से अपने शरीर को हिलाकर रंग का पानी झाड़ा और अपना शरीर फुलाकर वहीं बैठी रही। यह देखकर चिंकी को बहुत आश्चर्य हुआ। उसकी पिचकारी में अभी भी थोड़ा सा रंग बचा हुआ था। उसने दुबारा वह रंग चिड़िया पर उड़ेल दिया। इस बार चिड़िया उड़कर, बालकनी के सामने वाले बिजली के तारों पर बैठ गई। उसके उड़ते ही चिंकी ने देखा कि चिड़िया जिन अण्डों पर बैठी थी, वे रंग के पानी में डूब गए थे। यह देखकर चिंकी जोर–जोर से ताली बजाकर चिल्लाने लगी, ''मैंने चिड़िया के संग होली खेली। उसके अंडों को भी रंग दिया।''

उसकी आवाज सुनकर नीचे बैठी रिंकी दौड़ती हुई बालकनी में आई। उसे देखकर चिंकी चहकते हुए बोली– ''देखो दीदी! मैंने चिड़िया के संग होली खेली। उसके दोनों अंडों को भी रंग दिया।''

''यह क्या किया तूने? बेचारी चिड़िया का घर बर्बाद कर दिया? उसके अंडों को भी पानी में डुबो दिया पगली! यदि कोई तेरा घर इस प्रकार से नष्ट कर दे तो? तुझे कैसा लगेगा... बोल!'' यह कहती हुई रिंकी, चिंकी का हाथ पकड़कर उसे माँ के पास ले जाकर बोली– ''देखो माँ! इसने चिड़िया का घर रंग के पानी से भिगो दिया। अब कहाँ रहेगी बेचारी चिड़िया?'' कहते–कहते रिंकी की आँखों में आँसू भर आए। रूँआसे स्वर में उसने कहा– ''इतने दिनों से मैं गमले में पानी इसलिए नहीं डाल रही ती, कि चिड़िया का नन्हा सा घर और उसके अंडे बेकार हो जायेंगे। लेकिन इस शरारती चिंकी ने बेचारी चिड़िया का घर नष्ट कर डाला।''

रिंकी की बातें सुनकर चिंकी को अपनी भूल का अनुभव होने लगा। उसने सचमुच बहुत बड़ी गलती कर दी थी। उसे लगने लगा था कि अब तो माँ उसे अवश्य पीटेंगी। इससे पहले कि माँ उसे पीटने के लिए उठतीं, चिंकी ने अपने कान पकड़ते हुए कहा– ''मुझे क्षमा कर दो दीदी! मुझसे बहुत बड़ी भूल हो गई है। आगे से कभी भी ऐसी भूल नहीं करूँगी।''

चिंकी की बात सुनकर भी रिंकी कुछ नहीं बोली। वह उठकर अपने कमरे में चली गई। कुछ देर बाद बालकनी में उसे कुछ खटपट की आवाज सुनाई दी। यह सुनकर उसने मन ही मन सोचा, ''इस चिंकी को फिर से कोई शरारत सूझी है। कहीं वह चिड़िया के अंडे तो नहीं फोड़ देगी?'' मन में यह बात आते ही रिंकी बालकनी की ओर दौड़ पड़ी। वहाँ जाकर जो देखा तो उसे अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हुआ। उसने देखा कि चिंकी ने गमले के पास सूखे स्थान पर पुराना अखबार बिछाकर उस पर गमले में से भीगे हुए अंडे निकालकर रख दिए हैं, और कुछ दूरी पर खड़ी होकर, बिजली के तारों पर बैठी चिड़िया की ओर देखकर कर रही है– ''मुझे क्षमा कर दो चिड़िया रानी! मैंने तुम्हें और तुम्हारा घर भिगो दिया है। मुझसे भूल हो गई है। अब ऐसी भूल कभी

नहीं करूँगी।''

चिंकी की बातें सुनकर रिंकी मुस्करा उठी। वह चिंकी के पास गई और उसे अपनी गोद में उठाकर उसका माथा चूमते हुए बोली– ''अब तो मेरी प्यारी चिंकी ने अपनी भूल की क्षमा चिड़िया रानी से माँग ली है। अब चिड़िया रानी मेरी बहना को अवश्य क्षमा कर देगी।''

अभी रिंकी यह कह ही रही थी, तभी उसने देखा कि चिड़िया बिजली के तारों से उड़कर उसकी बालकनी में आई और समाचार–पत्र के ऊपर रखे अंडों पर आकर बैठ गई। यह देखकर रिंकी, चिंकी की ओर देखकर बोली– ''देखा, मैंने कहा था न कि चिड़िया रानी तुझ अवश्य क्षमा कर देगी? देख, चिड़िया ने तुझे क्षमा कर दिया है और तूने उसके अंडों को बचाकर जिस समाचार–पत्र पर रख दिया था, वह वहीं अपने अंडों पर फिर से आकर बैठ गई है। कल जब इस गमले का पानी सूख जायेगा, तब फिर से उसके अंडों को इसी गमले में रख दूँगी।''

रिंकी की बात सुनकर चिंकी खिलखिलाकर हँस पड़ी।

– शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

स्वयं बनें वैज्ञानिक

रंगीन जादू

– डॉ. राजीव तांबे, सुरेशकुलकणी

जादूगर आनंद का नाम आपने सुना है? नहीं सुना तो कोई बात नहीं, वे भारत के बड़े जादूगर रहे। उनका मायाजाल तो तूफान मचाता था। चलो हम भी आपको घर पर ही करने वाली जादू सिखाते हैं। जो आप करें और औरों को भी सिखा सकते हैं।

हमें क्या सामग्री लगेगी वह पहले नोट कर लीजिए।

हरा, काला और पीला रंग। (जल रंग, पोस्टर कलर या स्केच पेन भी चल सकते हैं।)

दो ड्रॉईंग शीट, स्केल, पेंसिल।

अब करते हैं अपने जादू की शुरूआत। एक सफेद ड्रॉईंग शीट पर स्केल से तीन बाय तीन इंच का चौकोन बनाना और उस चौकोन पर आधे इंच की बॉर्डर भी बनाना। अब इस चौकोन को हरे रंग से भर दे। चौकोन के बीचों–बीच में एक छोटा काला बिंदु बनाए। हमने चौकोन की बॉर्डर बनाई है उसे पीला रंग देना। अब जिस पर हमनें रंग भरे हैं वह शीट दायें हाथ में पकड़ो और बायें हाथ में सफेद शीट पकड़ो। फिर दायें हाथ में रखे पेंटिंग की ओर एक मिनिट एकाग्र होकर देखें। देखते समय आपको ध्यान चौकोन में स्थित काले बिंदु की ओर हो। फिर पलकों को हिलाये बिना उजाले में आकर सफेद शीट की ओर देखे। सफेद शीट पर आपको अलग ही रंग दिखाई देंगे। यह ऐसा क्यों होता है? यह आपको बता देते हैं–

आपने जो चित्र बनाया उसमें केवल लाल, नीला और हरा ये तीन रंग ही थे। इन रंगों की तीव्र संवेदनाओं को मिलाकर आपके मस्तिष्क में कई रंगों को देखने का अनोखापन आ जाता है। आँख की झिल्ली में ट्यूब और शंकु के आकार की तंत्रिका कोशिकाओं का विस्तृत विवरण होता है। ट्यूब और शंकु के आकार की कोशिकाएँ अलग–अलग तरह से कार्य करती हैं, संवेदना ग्रहण करने की उनकी शक्तियाँ भी अलग–अलग होती है। इनके काम करने में भी अंतर होता है। शंकू के आकार की कोशिकाएँ हर रंग की सूक्ष्म पहचान कर लेती है। अन्य कोशिकाएँ यह कार्य धीमे गति से करती है। परन्तु रात के समय यह स्थिति विपरीत हो जाती है। शंकू के आकार की कोशिकाएँ शीघ्र थक (क्षीण हो) जाती है और वे अपना कार्य ठीक से नहीं कर पाने के कारण मूल रूप में लौट आती हैं।

इस अपने रंगीन खेल में हम जिस बिंदु की ओर एकाग्र होकर देखते हैं तो हरे और पीले रंग की संवेदना ग्रहण करने वाली तंत्रिका थक जाती है और उसी समय सफेद रंग के कागज की ओर अगर देखा तो सफेद रंग में समाहित सात रंग आँखों में एकत्रित होने के कारण हरे और पीले रंग को वे समाहित नहीं कर पाती और सफेद रंग में से हरा रंग अगर निकाला जाए तो बचता है केवला नीला रंग और वही हमें दिखता है। वैसे ही सफेद रंग में से पीला रंग निकाल दिया तो, नीला रंग दर्शित होता है, इसीलिए अपने बायें हाथ में स्थित कागज पर नीली बॉर्डर और लाल चौकोन ऐसे आभासी रंग की आकृति हमें दिखती है।

– इन्दौर (म. प्र.)

होली है!
चित्रकथा: देवांशु वत्स
होली के दिन लाल बुझक्कड़ काका ने देखा कि बच्चे शांत बैठे हैं।
इन वानरों को इस बार क्या हुआ?
क्यों बच्चों! चुपचाप क्या हो रहा है?
काका! होली खेलना अब मुश्किल हो गया है?
क्यों?
पानी की कमी हो रही है।
बाजार के रंगों में भी केमिकल मिले होते हैं।
आं!
भला हो ऊपर वाले का। इन वानरों को सद्बुद्धि तो आई!
हां बच्चों! तुम लोग सही कह रहे हो। आओ, गुझिया खाओ।
अभी आया!
वाह!
फिर...
होली है!!
हाय!
काका! ये रंग फूलों से बने हैं।
ओह! शैतान बच्चों ने बातों में फंसा लिया।
होली है।

होली आई

– डॉ. शेषपाल सिंह 'शेष'

रंगों की पिचकारी वाली होली आई।
भर उमंग किलकारी वाली होली आई।।
माथे पर खुशबू चंदन की,
बिखरा चारों ओर गुलाल।
नीला-पीला बदन किसी का,
कोई किए हुए मुख लाल।।
सरावोर सब तन रंगों में,
अन्तर-भेद न ज्ञात
बड़ी यह भोली आई।
आज रंगों के साथ घुल गये,
सारे पाप, बैर, अभिमान।
आया कोई भी घर अपने,
सबका किया खूब सम्मान।।
लड्डू, पापड़, पकवानों से
भरे हुए हैं थाल,
हँसी-ठिठकोली आई।
जली होलिका दोष स्वाह सब,
बालि, फली, फल, अन्न स्वागतम्।
नाच-गान, संगीत, ठुमक-ठुम,
नव उछाह भर मन्न स्वागतम।।
ऊँच-नीच की बात नहीं अब,
सब हैं एक-समान
सजी रंगोली आई।

– आगरा (उ. प्र.)

रंग-रंगीली होली आई

– रामफल तिवारी

रंग-रंगीली होली आई।
खुशियों से भर झोली लाई।।

अबीर, गुलाल रंग से निखरे,
दमक रहे हैं सबके मुखड़े,
भूले हैं सब अपने दुखड़े,
लाल, हरे, पीले, नारंगी,
भर पिचकारी टोली आई।।

गली-गली औ हर चौराहे,
गूँज रहे हैं ढ़ोल नगाड़े,
मस्ती की चहुँ ओर नजारे,
बाल-वृद्ध हर जन-मानस में,
मचली है जीवन-तरुणाई।।

इक-दूजे को गले लगाते,
गुझिया और मिठाई खाते,
नव-वस्त्रों में हृदय लुभाते,
जन-जन, तन-मन पावन करने,
रंगों की गंगा लहराई।।

– कोरबा (छ. ग.)

मस्ती छाई

– सूर्य कुमार पांडेय

सबके दिल में बसने का,
पर्व आ गया हँसने का।
रंग–बिरंगी होली में,
निकले हैं हम टोली में।
यह त्योहार निराला है,
हमने रंग उछाला है।
मस्तानों की बस्ती का,
पर्व आ गया मस्ती का।
पिचकारी संग नर–नारी,
गले मिलें बारी–बारी।
होली है, भाई होली है,
लाई हँसी–ठिठोली है।
हुड़दंगी रंगरसियों का,
पर्व आ गया खुशियों का।
पेंट–वार्निश ठीक नहीं,
गोबर–कीचड़ नहीं सही।
हर्बल कलर मंगाएँगे,
(प्राकृत रंग मंगाएँगे)
हम तो वही लगाएँगे।
ढ़ोलक और मृदंगों का,
पर्व आ गया रंगों का।

– लखनऊ (उ. प्र.)

आपकी कविता

बच्चो! ऊपर के तीन श्रेष्ठ रचनाकारों की कविताएँ पढ़कर नीचे दिए खाली स्थान पर आपको 'होली' विषय पर अपनी कल्पना को पंख लगाकर एक प्यारी सी कविता लिखना है।

....
....
....
....
....

कौए ने खाये महुए

– आशीष श्रीवास्तव 'अनमोल'

सिमटते वन में एक–दो ही महुए के पेड़। उन पर भी कौवों का बसेरा। सभी पक्षियों को आस कि इस बार बसंत की ऋतु में जैसे ही महुआ फलेगा वे अपने छोटे बच्चों को अवश्य ही महुआ खिलाएंगे। कौए भी प्रसन्न। क्योंकि इस बार महुए के पेड़ पर पत्ते कम थे। ऐसा माना जाता है कि पत्ते कम यानी पुष्प अधिक। महुए का तेल नारियल तेल की तरह जम जाता है इसलिए कुछ से मक्खन का पेड़ भी कहते हैं।

फागुन और चैत्र के मध्य जैसे ही पक्षियों ने देखा कि पेड़ की टहनी के किनारे एक ओर गुच्छे में लाल–भूरे पत्तों के बीच दूधिया रंग के पुष्प खिलने वाले हैं तो उन्होंने पेड़ के ऊपर आकाश में गोल–गोल मंडराकर उड़ते हुए, चहककर अपनी प्रसन्नता प्रकट की। इनमें कई पक्षी ऐसे भी जो पहली बार महुए की सुगंध और स्वाद से परिचित होने जा रहे हैं।

पेड़ के ऊपर उड़ने वाले और पेड़ पर विश्राम करने वाले सभी पक्षियों में उत्साह। नये पक्षी तो और भी उत्सुक। जैसे महुआ खाने का उत्सव मनाया जाने वाला हो, लेकिन ये क्या? अगली सुबह जब कुछ पक्षियों ने आकर देखा तो महुए के फूल नीचे भूमि पर पड़े हुए हैं और कुछ वनवासी उन बिखरे फूलों को समेटकर बाँस की डलिया में भरकर ले जा रहे हैं।

नये–नवेले पक्षियों को लगा कि हो न हो ये सब कौवों का किया धरा है। उन्होंने ही हमारे आगमन से पूर्व रात में ही सारे फूल झड़ा दिये। वे एक साथ पेड़ पर डेरा जमाये कौवों से तो कुछ कह न सके, लेकिन उन्होंने अपने–अपने झुण्ड में आकर कौवों के प्रति नाराजगी जताई। यहाँ तक कहा कि कौवों के कारण ही जंगल संकट में है। आक्रोशित पक्षी कौवों को इतना बुरा कहने लगे कि उनके रंग और बोली पर भी आपत्ति व्यक्त करने लगे।

वन के कुछ बड़े पक्षियों ने समझाया भी कि ये जंगल किसी एक पक्षी का नहीं, सभी का है यदि उन्होंने हमारे बच्चों को महुए खाने से वंचित रखा भी है तो हम उन्हें समझायेंगे। जब पक्षियों का झुण्ड कौवों से बात करने के लिए उड़ते हुए वहाँ पहुँचा तो देखा बहुत से कौए काँव–काँव करते हुए पेड़ के चारों ओर ऐसे चक्कर लगा रहे हैं, जैसे महुए की पहरेदारी कर रहे हों। अब जंगल के और पक्षियों को भी लगा कि ये कौवे उन्हें डराकर भगाना चाहते हैं, इसलिए बाकी सभी पक्षियों ने भी निर्णय ले

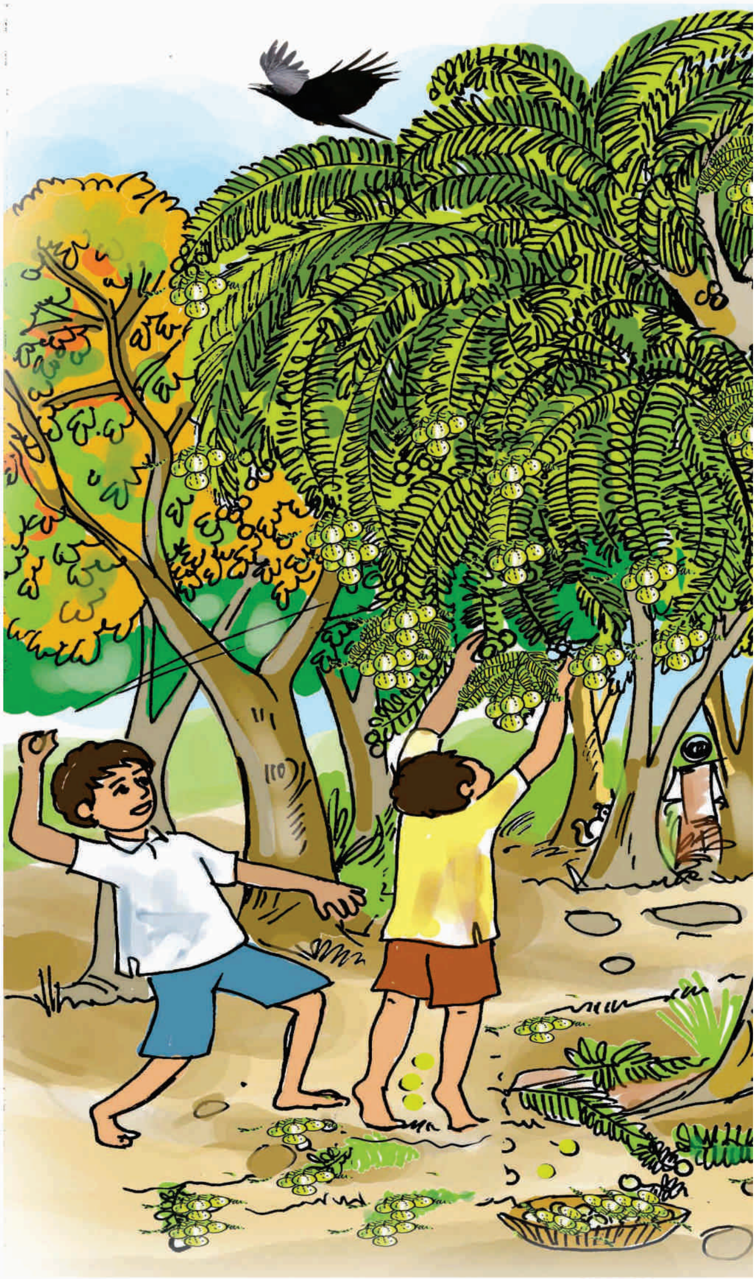

लिया कि कौवे हमें क्या भगायेंगे हम ही कौओं को जंगल से भगा देंगे।

जब ये बात कुछ अनुभवी कौवों को पता चली तो उन्होंने बाकी पंछियों के समक्ष सफाई देना चाही, बताया कि नीचे पेड़ पर कुछ वनवासी बच्चे पत्थर फेंक रहे थे, इसलिए वे आसमान में उड़ान भर रहे थे, उनका इरादा किसी को भी महुए खाने से रोकना नहीं था, न ही किसी को डराना। परंतु एकजुट रुष्ट पक्षियों के आगे कौवों की

एक न चली और निराश होकर उन्हें महुए का पेड़ ही नहीं, जंगल छोड़कर कहीं और उड़ जाना पड़ गया।

कौवों के जाने के कुछ दिन बाद ही नये पक्षी पेड़ पर जम गए। उन्होंने देखा कि महुए का पेड़ तो रात में खिलता है और सुबह झर जाता है। उन्हें अपनी भूल का पता चला, उन्हें लगा कि सच्चाई जाने बिना ही उन्होंने निर्दोष कौवों पर आरोप मढ़ दिये जो कि सही नहीं, यदि कोई उनके साथ ऐसा करे तो उन्हों कितना बुरा लगेगा। परंतु काफी देर हो चुकी थी, इसलिए सभी मौन साधे रह गए। उलटा कुछ पक्षी कहने लगे कि कौवे अपनी बात अच्छी तरह से नहीं रख सके, यदि वे हमें ये राज बता देते तो संभवत: वे भी हमारे साथ ही होते।

वैशाख आते ही पक्षियों को कौवों की कमी महसूस होने लगी, क्योंकि जंगल में पेड़ों के आस-पास पहले जैसी सफाई भी नहीं दिखाई दे रही थी। पक्षियों को याद आया कि कौवों को यूँ ही सफाई का दरोगा नहीं कहा जाता। जब जंगल के और भी बड़े पक्षियों गरुड़, चील, गिद्ध को कौवों को खदेड़े जाने की बात पता चली तो उन्होंने प्रस्ताव रखा कि यदि कौवों से सचमुच कोई त्रुटि हुई है तो उन्हें एक अवसर अवश्य ही त्रुटि सुधार के लिए देना चाहिए। ये बात नये-नवेले पक्षियों को भी अच्छी लगी। सबका समर्थन मिलते ही कौवों के नए स्थल को खोजा गया और उन्हें घर वापसी का आमंत्रण दिया गया।

कौवों ने बताया कि त्रुटि सुधार की कोई बात ही नहीं है। उन्हें तो किसी और ही भ्रम का शिकार होना पड़ा है। इस पर दूसरे मुखर पक्षियों ने अपने किये के लिए खेद प्रकट किया और भविष्य में संदेह के चलते किसी को दु:ख नहीं पहुँचाने का वचन भी दिया। आश्वासन मिलते ही वन में कौवे लौट आए और सभी आनन्दपूर्वक एकजुट होकर रहने लगे। सभी ने निश्चय किया कि वे आपस में झगड़ने की बजाय जंगल के विस्ता पर ध्यान केन्द्रित करेंगे। अब सबकी निगाहें आम के पेड़ पर जा टिकी।

– भोपाल (म. प्र.)

तितली

– हेमंत कुमार मेहरा

देखो कितनी सारी तितली,
रंग बिरंगी प्यारी तितली।
कितने सुन्दर पंख है इनके,
आँखें कितनी प्यारी हैं,
एक फूल से दूजे पर ये,
पल भर में उड़ जाती हैं।
बिना शोर के उड़ती रहती,
फूलों का रस चूसा करती।
दिखने में है मन को लुभाती,
रंगत है जो जी महकाती।

लेकिन बच्चों रखना ध्यान,
गलती से मत छेड़ों इनको।
वरना फिर ये डर जाएगी,
फर्र से फिर ये उड़ जाएगी।

– उज्जैन (म. प्र.)

गिलहरी

– पुखराज सोलंकी

नीम पेड़ पर एक गिलहरी
फुदक रही थी ऐसे।
बैठे बिठाए लग गई
लॉटरी उसकी जैसे।।
नीम ने पूछा अरी गिलहरी!
क्या हो गया ऐसा?
क्यों छाया है मन में तेरे
मौसम खुशियों जैसा?
सुन गिलहरी बोली भैया!
कभी न भूलूं यह उपकार।
नीम निंबोली का मुझको
तुमसे मिला है उपहार।।
कहीं नहीं जाना अब मुझको
यहीं पे अब मैं रह लूंगी।
खाकर मीठी नीम निंबोली
टुक–टुक टुक–टुक बोलूंगी।।

– बीकानेर (राजस्थान)

टॉफी का पेड़

– नीलम राकेश

''माँ पानी दीजिए।'' चीकू ग्लास लेकर रसोई में खड़ा था। पाँच साल के चीकू को माँ ने ध्यान से देखा और बोली– ''चीकू! तुम चार ग्लास पानी ले जा चुके हो। तुम इतना पानी कैसे पी सकते हो?''

''माँ! मुझे बहुत सारा मतलब बहुत सारा पानी चाहिए।''

आश्चर्य से माँ ने पूछा– ''तुम्हें बहुत सारा पानी आखिर क्यों चाहिए?''

''मुझे अपने पेड़ को पानी पिलाना है।'' चीकू बोला।

''किसको पानी पिलाना है?'' माँ की आँखें आश्चर्य से फैली हुई थीं।

''अपने पेड़ को पानी पिलाना है। वह बहुत प्यासा है।'' पूरे विश्वास के साथ चीकू बोला।

''पेड़ को पानी....?'' माँ को हँसी आ गई।

''आप हँस क्यों रही हैं?'' आश्चर्य से चीकू बोला।

''तुम पेड़ को पानी क्यों पिला रहे हो?'' हँसी को रोक माँ ने पूछा।

''अरे माँ! इतनी सी बात नहीं समझ रही हैं आप पेड़ प्यासा है न!'' समझाता हुआ चीकू बोला।

''अरे मेरे प्यारे बेटे! पेड़ को प्यास लगी है। यह बात तुम्हें कितने बताई?'' माँ ने प्यार से चीकू के सिर पर हाथ फेरा।

''पेड़ ने.....!'' माँ फिर चकित थीं।

''हाँ, पेड़ ने।''

''पेड़ ने कैसे बताया तुम्हें?'' माँ पूरी बात जानना चाहती थीं। उन्हें चीकू पर बहुत प्यार आ रहा था। अपनी बड़ी–बड़ी आँखें झपका कर चीकू बोला– ''माँ! कल न रात में, जब मैं सो रहा था। तब मैंने सपने में देखा कि मेरे घर के बाहर लगे दोनों पेड़ों में से एक में बहुत सारी टॉफियाँ लगी हैं और एक में चॉकलेट।''

''अच्छा फिर?'' माँ ने पूछा।

''मैं न माँ! उसमें से तोड़–तोड़ कर टॉफी और चॉकलेट खा रहा था।''

''तुम्हें तो बहुत आनन्द आया होगा।'' माँ मुस्कुरा कर बोलीं।

''हाँ, आनंद तो आ रहा था। पर अचानक से पेड़ पर से सारी की सारी चॉकलेट, सारी टॉफियाँ और सारी पत्तियाँ भी नीचे गिर गईं।''

''अरे! लेकिन क्यों?'' माँ को आश्चर्य हुआ।

''माँ, मैंने भी चौंक कर पेड़ से पूछा कि यह क्या हुआ? तो न, पेड़ बोला– ''मैं बहुत प्यासा हूँ। मेरी कोई देखभाल नहीं करता। मैं इतना दुर्बल हो गया हूँ कि टॉफी, चॉकलेट तो दूर पत्तियाँ भी मुझे भारी लग रही हैं।''

''अरे, अच्छा! ऐसे बोला पेड़।''

''माँ! मैंने जल्दी से पेड़ से वादा किया कि पेड़

भाई! तुम चिंता मत करो मैं तुम्हारा ध्यान रखूँगा। तुम्हें निर्बल नहीं होने दूँगा। तुम्हें खूब पानी पिलाऊँगा।''

''शाबाश बेटा! तुमने बहुत अच्छा किया।''

''माँ, मुझे अपना वादा पूरा करना है। इसीलिए मुझे और पानी चाहिए।''

''आओ, बाहर चलो।'' कहते हुए माँ चीकू को हाथ पकड़कर बाहर ले आईं और बोली, ''अवश्य पूरा करो अपना वादा। लेकिन ग्लास के पानी से पेट नहीं भरेगा तुम्हारे पेड़ का। यह लो मैंने पाइप लगा दिया है। अब ढेर सारा पानी दो उसे। खाद भी मँगा दूँगी फिर तुम समय-समय पर अपने पेड़ को खाद-पानी देते रहना। अब हम मिलकर तुम्हारे पेड़ की देखभाल करेंगे। तुम्हारा पेड़ कभी निर्बल नहीं होगा।''

नन्हा चीकू प्रसन्नता से अपने पेड़ को पानी पिलाने लगा।

– लखनऊ (उ. प्र.)

बाल प्रस्तुति

दृढ़ संकल्प

– संदीप यादव

रिचर्ड बायर्ड नामक एक बालक था। उसकी बड़ी इच्छा थी कि वह उत्तरी ध्रुव में पहुँचने वाला प्रथम व्यक्ति बने। अत: दृढ़ संकल्प करते हुए उसने अपनी डायरी में अपना संकल्प लिख लिया। पर उत्तरी ध्रुव में जाना असंभव कार्य था। वहाँ की भयानक ठण्ड में आदमी का मर जाना निश्चित था। रिचर्ड ने उसी दिन से अपने शरीर को बलवान बनाना शुरू कर दिया ताकि वह उत्तरी ध्रुव की खून जमा देने वाली ठण्ड को सह सके। अस्तु वह अपने पर हल्के वस्त्र पहनता और नंगे बदन शीत ऋतु में घूमता। एक दुर्घटना में पैर की हड्डी टूट जाने के कारण वह लंगड़ा हो गया तथा चलने-फिरने से भी लाचार हो गया। इतना होने पर भी रिचर्ड की, अपना संकल्प पूरा करने की जिद बनी रही। धीरे-धीरे उसने विमान उड़ाना सीख लिया। पर विमान उड़ाने के दौरान भी उससे अनेक दुर्घटनाएँ हो गईं। एक बार तो वह आकाश से सिर के बल धरती पर आ गिरा। खराब रिकार्ड व टूटे पैर के कारण उसे वायुयान चालक की नौकरी से निकाल दिया गया। इतने पर भी रिचर्ड निराश नहीं हुआ। वह उत्तरी ध्रुव की यात्रा के लिए धन एकत्रित करने लगा। १९२६ में उसने उत्तरी ध्रुव पर पहली उड़ान भरी। आखिरकार उसका दृढ़ संकल्प पूरा हुआ और १९२९ में उसने दक्षिणी ध्रुव में उड़ान भरकर सफलता प्राप्त कर ही ली। दक्षिण ध्रुव से अमरीका वापस आने पर रिचर्ड को एडमिरल का पद देकर सम्मानित किया गया।

संकल्प-शक्ति से असाध्य और असंभव समझे जाने वाले कार्य भी संभव हो सकते हैं।

व्यंग्य चित्र

– चाँद मोहम्मद घोसी
नन्हा बाजार, मेड़ता सिटी (राज.)

कोयल का गीत

– शिवम सिंह

पास हमारे आरी कोयल,
पास हमारे आ।
मीठे–मीठे गीत शहद से,
प्यारे–प्यारे गा।।

सिलवाऊंगी तुझे ओढ़नी,
चाँद–सितारों वाली।
कानों में पहना दूँगी मैं,
सोने वाली बाली।।

लड्डू–पेड़े–गोली–बिस्किट,
जो मन भाए खा।
मेरा घर सार तेरा है,
एक बार आ जा।।

गीत सुरीले अपने जैसे,
मुझको भी सिखला।
सखी बना लूँगी मैं तुमको,
घर आज हमारे आ।।

तेरे स्वागत में घर आँगन,
खूब सजाया है।
अपनी सखियों को,
तुमसे मिलने बुलवाया है।।

सा रे ग म प ध नि सा
साथ हमारे गा।।

– मनेथू (उ. प्र.)

देश विशेष

भारत वंशियों ने निर्माण किया नये राष्ट्रों का

– श्रीधर बर्वे

यदि हम एक ओर ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, न्यूजीलैण्ड और संयुक्त राज्य अमेरिका तथा दूसरी ओर गयाना, त्रिनिडाड, सूरीनाम, मॉरीशस और फीजी को रखकर इनमें समानता के सूत्रों की खोज करें तो सतही तौर पर कुछ नहीं दिखेगा। इतिहास के पृष्ठों को पलटें तो समानता स्पष्ट दिखाई देती है। प्रथम तो उल्लेखित सभी देश साम्राज्यवादी शक्तियों के उपनिवेश रहे हैं। कुछ और अन्दर पैठ करें तो अन्तर दिखने के पहले एक समानता और दिखेगी कि ये सभी देश अप्रवासियों से आबाद है (आंशिक रूप से केवल फीजी को छोड़कर)। दूसरा अन्तर यह है कि मॉरीशस, फीजी, गयाना, त्रिनिदाद और सूरीनाम अप्रवासियों से निर्मित वे देश हैं जहाँ आबाद होने के लिए लोगों को ले जाया गया जबकि कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड और सं. रा. अमेरिका में अप्रवासी स्वेच्छा से वहाँ गये।

वहाँ जाकर उन्होंने अपनी भाषा–संस्कृति को न केवल बचाकर रखा अपितु शासक जाति के होने के कारण उन्हें अन्य समुदायों पर थोपा भी। जबकि दूसरे समुच्चय के देशों में पहुँचे और ले जाये लोगों ने अपनी संस्कृति और भाषा को बड़ी कठिनाइयों से बचाया और संस्कृति को सहेजा।

शासक वर्ग के लोगों ने अपनी भाषा और संस्कृति आगन्तुकों पर बलपूर्वक थोपी– दूसरी ओर गिरमिटिया श्रमिकों ने शासकों की मनमानी और अत्याचारों को सहकर भी इन्हीं तत्वों को जीवनदायी, मानव निर्मात्री कारकों को अब तक बचाकर ले आए, उन्हें संरक्षित कर ले आए।

आखिरकार गिरमिटिया श्रमिकों को भारत से ले जाने की आवश्यकता क्यों हुई? यह प्रश्न स्वाभाविक है। वास्तव में इस प्रश्न की जड़ में जाएँ तो विदित होगा कि योरोप में रेनेसाँ युग के कारण जो जाग्रति आयी उसने दुनिया का भावी इतिहास और भूगोल बदलकर रख दिया। इसी प्रभाव के चलते कोलम्बस ने अमेरिका महाद्वीप की खोज की। इस खोज के बाद योरोप के देशों विशेषकर स्पेन, पुर्तगाल, ब्रिटेन और फ्रांस ने नई दुनिया (अमेरिका महाद्वीप) में अपने उपनिवेश स्थापित किए, साम्राज्य का विस्तार किया और वहाँ के मूल निवासियों को समाप्ति के कगार पर लाकर रख दिया। योरोपीय गोरों ने जब वहाँ की कृषिभूमि और खानों पर अधिकार किया तो उन्हें मानवीय श्रम की आवश्यकता हुई। इसके लिए उन्होंने अफ्रीका महाद्वीप के निवासियों को गुलाम बनाकर उनका व्यापार आरम्भ किया। क्योंकि श्रम शक्ति के लिए उपलब्ध मूल निवासियों को वे लगभग समाप्त कर चुके थे। गुलामी की प्रथा और उनके व्यापार का करोबार १९वीं शताब्दी के मध्य तक चलता रहा।

दास प्रथा की समाप्ति अवश्य हुई परन्तु श्रमशक्ति की आवश्यकता बनी रही क्योंकि मुक्त गुलामों ने मजदूरी करने से इनकार कर दिया था।

श्रमिकों की प्राप्ति के लिए उपनिवेशवादी शक्तियों ने एशिया में विशेषकर भारत, चीन और ईस्ट इण्डीज (अब इण्डोनेशिया) की ओर नजर डाली। १९वीं शताब्दी के मध्य में लाखों अनुबंधित मजदूर (गिरमिटिया श्रमिक) विश्व के अनेक देशों में पहुँचाये गये, ले जाए गये। ले जाने के लिए उन्होंने कई प्रकार के उपाय अपनाये। प्रलोभन, सुखद भविष्य के सपने दिखाकर, दलालों के माध्यम से फुसलाकर, डराकर, आदि आदि।

मॉरीशस में भारतीय श्रमिकों की पहली बड़ी खेप १ मई १८३४ में पहुँची। भारतीय श्रमिकों के पहले वहाँ

अफ्रीकी मुक्त दास पहले से थे। मॉरीशस को हिन्द महासागर का कुंजी द्वीप कहा जाता है। सत्ता संघर्ष के चलते इस द्वीप पर पहले डचों ने अधिकार किया, उनके बाद फ्रांसीसियों ने और अन्ततः अंग्रेजों ने इस शकर के भण्डार द्वीप को फ्रांसीसियों से छीन लिया।

तब से १९६८ में स्वतन्त्र होने तक मॉरीशस अंग्रेजों के आधिपत्य में रहा। भारतीय श्रमिक वहाँ इतनी बड़ी संख्या में पहुँचाये गए कि वे वहाँ की जनसंख्या का सबसे बड़ा भाग बन गये। वर्तमान में मॉरीशस की जनसंख्या का लगभग ७० प्रतिशत भाग भारतवंशियों का है। वहाँ बसे हुए भारतीय मूल के नागरिकों ने हिन्दी, उर्दू, तमिळ, मराठी, गुजराती और तेलुगु जैसी भारतीय भाषाओं को जीवित रखा है।

भारत के बाहर सम्भवतया अन्यत्र ऐसा नहीं है। पिछली दो शताब्दियों से रह रहे हमारे इन अप्रवासी भाई–बहनों ने उस देश के समाज में समरस होकर सामाजिक एकता स्थापित की, आर्थिक स्तर पर उसे समृद्ध और नेतृत्व भी किया। डॉ. शिवसागर को रामगुलाम के नेतृत्व में मॉरीशस ने १२ मार्च १९६८ को स्वतन्त्रता प्राप्त की। डॉ. रामगुलाम को इस स्वर्गोपम द्वीप देश में राष्ट्रपिता का सम्मान प्राप्त है।

उन और उनके जैसे दूरदर्शी नेताओं के सशक्त नेतृत्व का परिणाम है कि आज मॉरीशस अफ्रीका महाद्वीप के अग्रणी, सम्पन्न तथा स्थिर सुशासन वाला देश माना जाता है।

विशेष उल्लेखनीय है कि मॉरीशस में भारतीय भाषाओं में साहित्य सृजन हो रहा है। पण्डित विष्णुदयाल, सोमदत्त बखोरी, अभिमन्यु अनत, वीर सेन जागा सिंह, रामदेव धुरन्धर और राज हीरामन जैसे साहित्यकारों ने हिन्दी साहित्य को अन्तर्राष्ट्रीय आयाम प्रदान किया है।

सुदूर पूर्व में, प्रशान्त महासागर में पर्यटकों का पसंदीदा स्थल है– फीजी देश। यह द्वीप समूहों का देश ऑस्ट्रेलिया के पूर्वोत्तर में स्थित है। इस देश में भी भारत से श्रमिक १९वीं शताब्दी के मध्य में पहुँचाये गये थे। वहाँ पहुँच उन्होंने अपने परिश्रम का लोहा मनवाकर फीजी को धन–धान्य से सम्पन्न बना दिया।

फीजी ब्रिटेन का उपनिवेश था, अपने शासनकाल में ब्रिटिश शासकों ने मूल फीजीवासियों और भारतीय श्रमिकों को हर क्षेत्र में दूर रखा उनमें सौहार्द और सामंजस्य कायम नहीं होने दिया। परिणाम स्वरूप मूल फीजीवासी भारतवंशियों को पराया ही मानते रहे।

वे यह नजर अन्दाज कर गये कि उनके देश को समृद्धि भारतीयों के कारण ही प्राप्त हो सकी। यही कारण है कि १९८७ में, स्वतंत्रता प्राप्ति के १७ वर्षों बाद, फौज ने भारतवंशियों को बेदखल करना आरम्भ किया। इसके बाद २०१४ तक कई बार कुछ और विद्रोहियों ने भारत वंशियों के विरुद्ध षड़यंत्र रचा। परिणाम स्वरूप हजारों भारत वंशियों को अपने नए अंगीकृत देश फीजी को त्यागने के लिए मजबूर होना पड़ा।

इस स्वेच्छाचारी, नस्लवादी व्यवहार के लिए फीजी सरकार की अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भर्त्सना हुई व सुधार के लिए दबाव भी पड़ा। इस कारण इस प्रशांत

मॉरीशस

फीजी

महासागर के देश में नये अध्याय का आरम्भ हुआ।

नया संविधान बना, जो २०१४ के अक्टूबर माह से प्रभावी हुआ। इसके अनुसार मूल फीजीवासी, भारतीय मूल के फीजीवासियों को समान नागरिकता के अधिकार प्राप्त हुए। भारतीयों की भाषा हिन्दी को आधिकारिक मान्यता प्राप्त हुई।

त्रि–भाषा सूत्र शिक्षा के लिये निश्चित किया गया। फीजी के विद्यालयीन विद्यार्थियों को फीजीयन भाषा, हिन्दी भाषा और अंग्रेजी भाषा का अध्ययन अनिवार्यतया करना होगा। ध्यान देने योग्य तथ्य यह भी है कि नया संविधान एक साथ फीजीयन भाषा, हिन्दी भाषा और अंग्रेजी भाषा में तैयार किया गया है। फीजी की संसद की कार्रवाही हिन्दी में भी होती है। इस देश की जनसंख्या में भारतवंशियों का भाग ४० प्रतिशत है।

प्रशान्त महासागर से प्रस्थान कर अटलांटिक महासागर की शाखा कैरीबियन सागर में भी ऐसे तीन प्रमुख देश हैं जिनके निर्माण में भारत वंशी नागरिकों का अतुलनीय योगदान है– ये देश हैं– गयाना, सूरीनाम और त्रिनिडाड। सूरीनाम १९७५ में आजाद हुआ, इसके पूर्व वह नीदरलैण्डस् का उपनिवेश था। शेष दो–गयाना और त्रिनिडाड ब्रिटेन के उपनिवेश थे।

गयाना १९६६ में एवं त्रिनिडाड १९६२ में स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में उदित हुए। इन तीनों देशों को भारत वंशी नागरिकों ने अपने अथक परिश्रम से संवारा और समृद्ध बनाया है। इन देशों के शासकों ने औपनिवेशिक युग में विभिन्न नस्ल और मूल के निवासियों को **'फूट डालो और राज करो'** की नीति से शासित कर उनमें सौमनस्य और समरसता उत्पन्न नहीं होने दी।

परिणाम हुआ कि स्वाधीन होने के बाद गयाना और त्रिनिडाड में नस्लीय संघर्ष हुए। मतभेद की व्यापकता आरम्भ से लेकर सत्ता तक रही। गयाना को डॉ. छेदी जगन का सबल और जनवादी नेतृत्व मिला। उन्हें गयाना में राष्ट्रपिता की प्रतिष्ठा प्राप्त है।

फीजी के मूल निवासी काईवीती कहलाते हैं। १० अक्टूबर १८७४ को फीजी के अंतिम सम्राट दावम्बाऊ तथा अन्य बड़े सरदारों ने अपने हस्ताक्षरों से समर्पण पत्र लिखकर फीजी का शासन महारानी विक्टोरिया की

देश का नाम	क्षेत्रफल वर्ग किलो मीटर में	जनसंख्या	राजधानी	स्वतंत्रता वर्ष
मॉरीशस	२,०४०	१३ लाख	पोर्टलूई	१२/०३/१९६८
फीजी	१,८३,७६	९ लाख	सूवा	१०/१०/१९७०
सूरीनाम	१,६३,८२०	५.५ लाख	पारामारिबो	२५/११/१९७५
गयाना	२,१५,०००	७.५ लाख	जॉर्जटाउन	२६/०५/१९६६
त्रिनिडाड टोबैगो	५,१२८	१३.५ लाख	पोर्ट ऑफ स्पेन	३१/०८/१९६२

– इन्दौर (म. प्र.)

दौड़
चित्रकथा-
ये क्या हो रहा है? बद्धुआ
काका, ये दौड़ हो रही है इनमें से जीतने वाले को एक चांदी का कप इनाम मिलेगा..
अच्छा! अगर केवल जीतने वाले को ही कप मिलेगा..
तो केवल जीतने वाला ही दौड़े, बाकी दूसरे क्यों दौड़ रहे हैं?

आदर्श पत्रकारिता के प्रतीक : गणेश शंकर विद्यार्थी

– डॉ. रामसिंह यादव

उन्नीस सौ बीस से सन् उन्नीस सौ तीस के मध्य भारत इस देश में जो भी जितने राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आन्दोलन छिड़े थे अमर शहीद गणेश शंकर विद्यार्थी जी और उनके अखबार 'प्रताप' की उन आन्दोलनों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। साम्प्रदायिक एकता को लेकर उसके लिये तो गणेश शंकर विद्यार्थी जी ने अपना जीवन ही होम कर दिया था।

इलाहाबाद में २६ अक्टूबर १८९० को उनका जन्म हुआ था। २५ मार्च १९३१ को कानपुर में भयानक साम्प्रदायिक दंगा हुआ जिसमें गणेश शंकर विद्यार्थी अपनी जान की परवाह न कर लोगों को समझाते रहे। मुसलमानों की जान की रक्षा की उनको मौत के मुँह से निकाल कर सुरक्षित भिजवाया। शांति बनाए रखने के प्रयास करते रहे। ऐसे भयानक उत्तेजना पूर्ण मारकाट के समय में किसी साधारण आदमी का साहस नहीं होता, कि वह अपनी जान की परवाह न कर लोगों को समझाते रहे और शांति बनाए रखने का प्रयास करते रहे।

ऐसे भयानक उत्तेजनापूर्ण समय में किसी साधारण आदमी का साहस नहीं होता कि वह दंगा शांत करने के लिए उस आग में कूद पड़े। परिणाम यह हुआ कि कुछ मुसलमान आतताइयों ने विद्यार्थी जी की निर्मम हत्या कर दी। इस प्रकार इस परम राष्ट्रभक्त आदर्श अनूठे पत्रकार गणेशशंकर विद्यार्थी ने साम्प्रदायिक एकता के लिये अपने जीवन का बलिदान कर दिया। विद्यार्थी जी साम्प्रदायिक सौहार्द की रक्षा करते हुए ४० वर्ष की अवस्था में शहीद हो गये।

दूसरों की भलाई करते हुए अपने जीवन का उत्सर्ग करके विद्यार्थी जी ने समस्त राष्ट्र के सामने एक अप्रतिम अनूठा आदर्श रखा। महात्मा गांधी ने गणेश शंकर विद्यार्थी की हत्या के बाद १९ अप्रैल १९३१ में यंग इंडिया में लिखा था। उनका (गणेश शंकर विद्यार्थी) का रक्त वह सीमेन्ट है जो अन्ततोगत्वा दोनों जातियों को जोड़ेगा। वह मरे नहीं है, वह आज भी तब से कहीं अधिक सच्चे रूप में जी रहे हैं। जब हम उनके भौतिक शरीर में जीवित देखते थे। लेकिन पहचानते न थे। पंडित जवाहर लाल नेहरु ने विद्यार्थी जी के निधन पर कहा था– वह शान से जिया और शान से मरा, और मरकर जो उन्होंने सबक सिखाया वह हम वर्षों जिन्दा रहकर क्या सिखलायेंगे। पंडित जवाहरलाल नेहरू उनका स्मरण हरदम अपने प्रदेश के सेनापति के रूप में करते थे।

पत्रकारिता की शुरूआत :– बाल्यकाल से ही विद्यार्थी जी प्रखर बुद्धि और निर्भीक चरित्र के थे। हिन्दी और उर्दू के साथ उन्होंने अंग्रेजी और फारसी में भी निपुणता प्राप्त की थी। अपनी स्वतंत्र चिंतन की प्रकृति और राष्ट्रवादी होने के कारण वह विभिन्न पद छोड़कर पत्रकारिता के क्षेत्र में आए। प्रसिद्ध राष्ट्रभक्त पंडित सुन्दरलाल ने उन्हें अपने कर्मयोगी में हिन्दी लेखन टिप्पणी लिखने का कार्य सौंपा था। इससे पहले वह स्वराज्य में उर्दू में लिखते थे। विद्यार्थी को आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने साहित्यिक पत्रिका सरस्वती में सम्पादकीय सहायक बनाया और इस कार्य को लगभग एक वर्ष तक करने के बाद वे अभ्युदय से जुड़ गये। नवम्बर १८९३ में गणेश शंकर विद्यार्थी जी ने कानपुर में एक साप्ताहिक पत्र 'प्रताप' का प्रकाशन शुरू किया जो बाद में प्रमुख दैनिक के रूप में प्रकाशित होने लगा। प्रताप इस पत्र के माध्यम से आप अंग्रेज सरकार की राष्ट्रविरोधी नीति तथा विभिन्न प्रशासकों के अत्याचार, भ्रष्टाचार को उजागर करते रहे। इसके लिये उन्हें अनेक बार जेल जाना पड़ा था। कठोर जुर्माना देना पड़ा था तथा अंग्रेजों की प्रशासकीय उत्पीड़न भी सहना पड़ी थी।

सच्चाई के लिये प्रतिबद्ध :– विद्यार्थी जी सदैव उत्तरदायित्वपूर्ण पत्रकारिता के आदर्शों का दृढ़ पालन करते रहे। कोई भी समाचार बिना उसकी सच्चाई की गहरी

छानबीन किये प्रकाशित नहीं किया जाता था। पत्रकारिता के विषय में अपने आदर्श को विद्यार्थी जी ने इन शब्दों में व्यक्त किया– ''संसार में अधिकांश समाचार–पत्र पैसा कमाने तथा झूठ को सच और सच को झूठ सिद्ध करने में लगे हैं। अधिकांश बड़े समाचार–पत्र धनी लोगों द्वारा संचालित होते हैं। अपने संचालकों या अपने दल के विरुद्ध सच बात कहना तो दूर, उनके पक्ष में समर्थन के लिये वे हर तरह के हथकंडों को काम में लेना अपना नित्य धर्म समझते हैं। इस कार्य के लिए वे इस बात पर विचार करना आवश्यक नहीं समझते कि सत्य ही उनके ग्रहण करने की वस्तु है। वे तो अपने मतलब की बात चाहते हैं। संसार में इने–गिने पत्रों को छोड़कर सब ऐसा कर रहे हैं। बहुत कम ऐसे लोग हैं जो इस बात का विचार करते हैं कि हमें सच्चाई की लाज रखना चाहिए।''

गणेश शंकर अपने नाम के साथ विद्यार्थी लिखते थे। इसमें उनका विचार था कि मनुष्य जीवन भर कुछ न कुछ सीखता रहता है। उसके ज्ञान का भंडार पूरा नहीं होता, वह वास्तव में आचार्य नहीं होता है, वह विद्यार्थी ही बना रहता है। विद्यार्थी जी ने विदेशी राजनैतिक और साहित्यिक पुस्तकें पढ़ी थीं। वह टालस्टाय, शेक्सपीयर, शेली, एचजी वेल्स आदि के प्रशंसक और फ्रेंच लेखक ह्यूगो पर तो वह मुग्ध थे। ह्यूगो के लॉ मिजरेबुल का अनुवाद उन्होंने सन १९३० में हरदोई जेल में अपने पांचवे कारावास के दौरान पूरा किया था। और उसका नाम रखा था 'आहुति'। अपने देश के लेखकों और विद्वानों, तथा राजनीतिज्ञों के ग्रंथों को भी उन्होंने खूब पढ़ा था। महाभारत और रामायण उनको बहुत प्रिय थी।

प्रखर वक्ता :– राष्ट्रीय आंदोलन में आपकी निष्ठापूर्ण प्रतिबद्धता के कारण १९२५ में कानपुर में आहूत भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के ४०वें अधिवेशन के आयोजन का सारा कार्य आपको ही सौंपा गया। अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष के रूप में आपके ओजस्वी भाषण की सभी प्रतिनिधियों और श्रोताओं ने भूरी–भूरी प्रसंशा की थी।

विद्यार्थी जी सन १९२६ में कौसिंल में भी चुने गये।

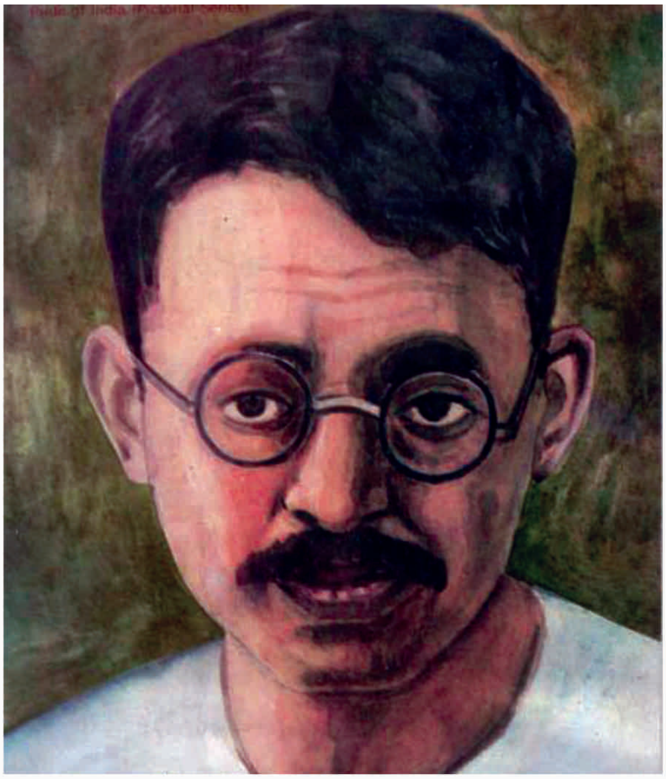

उनकी लोकप्रियता के आधार पर उन्होंने कानपुर के एक रईस को पराजित करके दिखा दिया कि रुपयों का महत्व नि:स्वार्थ देश सेवा और त्याग के सामने तुच्छ होता है। जब तक वह कौंसिल के मेम्बर रहे, उन्होंने बड़ी योग्यतापूर्वक काम किया। विद्यार्थी जी हिन्दी के भी बहुत बड़े समर्थक थे। गोरखपुर में १९२९ में संपन्न अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के १९वें अधिवेशन के अध्यक्ष चुने गये। सभापति के आसन से उन्होंने अपने भाषण में कहा था– ''हिन्दी भाषा और हिन्दी साहित्य का भविष्य बहुत बड़ा है। मुझे तो ऐसा आभास हो रहा है कि संसार की कोई भी भाषा मनुष्य, जाति को इतना ऊँचा उठाने, मनुष्य को यथार्थ में मनुष्य बनाने और संसार को सुसभ्य और सद्‌भावना से युक्त बनाने में उतनी सफल नहीं हुई जितनी कि आगे चलकर हिन्दी भाषा होने वाली है। हिन्दी राष्ट्रभाषा की हैसियत से न केवल एशिया महाद्वीप के राष्ट्रों की पंचायत में बल्कि संसारभर की पंचायत में एक साधारण भाषा के समान बोली जायेगी।

– उज्जैन (म. प्र.)

दिल में हिंदुस्तान
देश को करें रोशन
मेक इन इंडिया
के साथ
SURYA
MADE IN INDIA
LIGHTING | APPLIANCES
FANS | STEEL & PVC PIPES
आत्मनिर्भर भारत की पहचान
SURYA ROSHNI LIMITED
E-mail: consumercare@surya.in | www.surya.co.in | suryalighting surya_roshni
Tel: +91-11-47108000, 25810093-96 | Toll Free No.: 1800 102 5657

क्या है ग्रहों के अंदर ?

पृथ्वी की तरह ही हर एक ग्रह के भीतर कुछ ठोस, कुछ द्रव या कोई गैस मौजूद है यहां हम हमारे सौर मंडल के सदस्यों की भीतरी संरचना में मौजूद मूल तत्वों का सामान्य परिचय करवा रहे हैं..

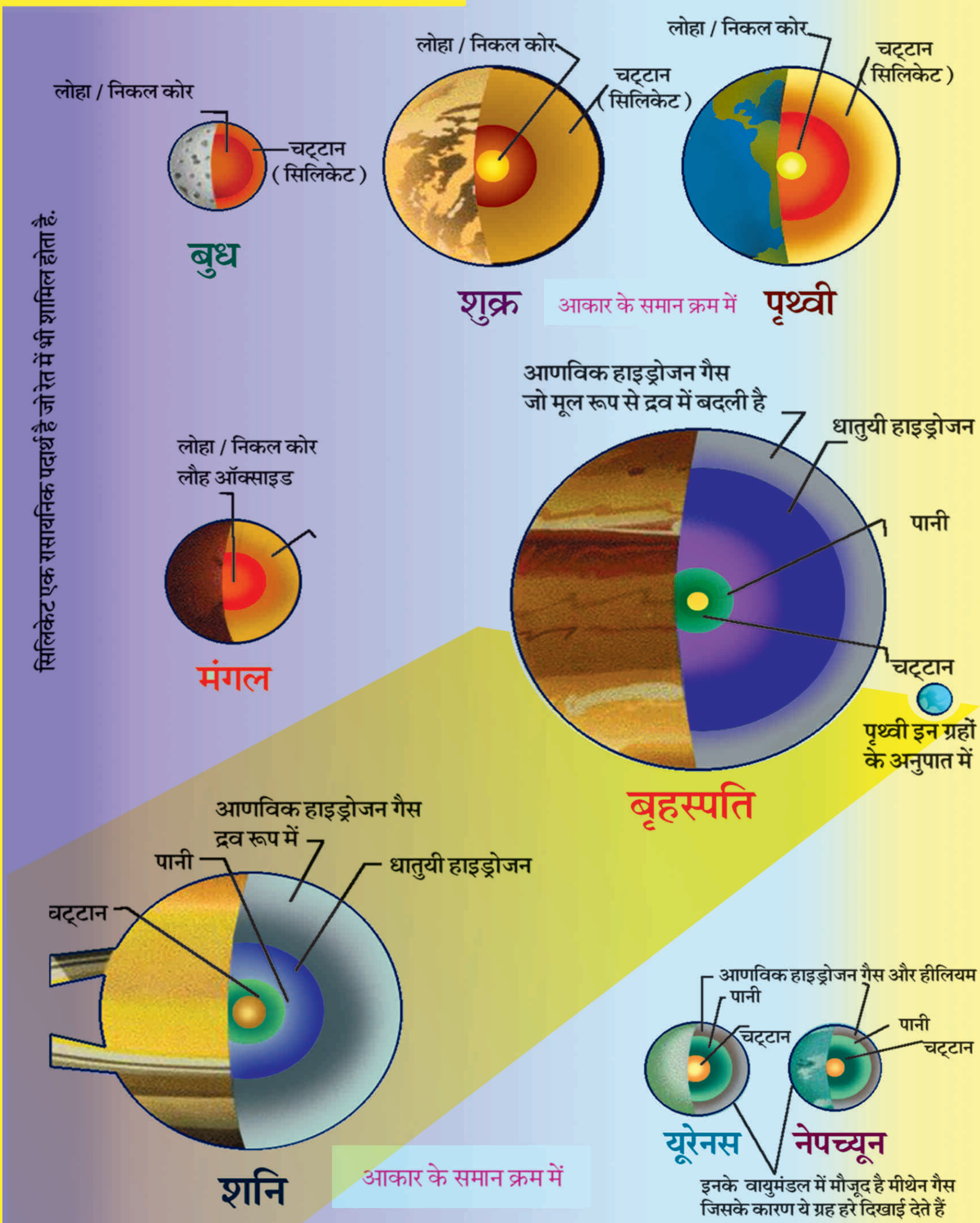

सिलिकेट एक रासायनिक पदार्थ है जो रेत में भी शामिल होता है.

सचित्र जानकारी-संकेत गोस्वामी

प्रसंग : भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु बलिदान दिवस : २३ मार्च

शहीद भगतसिंह की चतुराई से बनी बात

– साँवलाराम 'नामा'

हमारे हिन्दुस्थान के अंग्रेजों की आधीनता के भारत माता की गुलामी की बेड़ियाँ काटने क्रांतिकारी लगे रहे थे। समय में लाहौर की एक विशेष बात है। एक दिन सरदार भगतसिंह, विजयकुमार सिन्हा और भगवानदास माहौर एक सभा से लौट रहे थे। रास्ते में किसी सिनेमा हॉल में अमेरिका के हब्शी गुलामों (दासों) पर होने वाले जबरन अत्याचारों, अनाचारों, दु:खों पर लिखी गई प्रसिद्ध पुस्तक **'अंकल टॉम्स केबिन'** पर आधारित फिल्म का विज्ञापन, पोस्टर रोमांचित करने वाला दिखाई दिया। तब तत्काल भगतसिंह बरबस बोले– ''यह हमारी दशा–देश कि दासता और अंग्रेजों के हम पर हो रहे जुल्मों जैसी ही है यह फिल्म अवश्य देखनी चाहिए।''

परन्तु पैसों की समस्या थी। क्रांतिकारियों के नेता चन्द्रशेखर आजाद सभी को भोजन के लिए चार आने रोज देते थे। उन दिनों दो आने में एक समय का भोजन मिलता था। सस्ता समय था, आज जैसी आम जनता पर महंगाई की कमर तोड़ मार किसी पर नहीं थी।

तब भगवानदास माहौर के पास दो दिनों के भोजन के एक रुपये आठ आने (तीनों के लिये) थे और सिनेमा के तीन टिकिट बारह आने में मिल सकते थे।

किन्तु फिर तीनों के एक दिन के भोजन का प्रबंध कैसे होता? माहौर जी ने पैसे देने से इंकार कर दिया। किन्तु भगतसिंह हताश नहीं हुए और आत्मविश्वास के साथ प्रबल आग्रह के समक्ष उन्हें झुकना पड़ा। भागकर भारी भीड़ में जद्दोजहद कर भगतसिंह तीन टिकिट ले आए। किन्तु चवन्नी के टिकिट समाप्त हो जाने के कारण वे अठन्नी के टिकिट लाए।

अब सारे पैसे समाप्त हो चुके थे। और दो दिन भूखे रहने की स्थिति थी। फिल्म देखकर तीनों निकले तो भूख से आँतें कुलबुला रही थी, चूहे पेट में कूदने लगे थे। किन्तु कोई किसी से कुछ नहीं बोला। अलबत्ता भगतसिंह ने आजाद के सामने जाकर बिना कोई भूमिका बांधे फिल्म की कहानी अत्यन्त हृदयस्पर्शी, मार्मिक व प्रभावशाली तरीके से करिश्माई ढंग से उन्हें बखूबी सुनाई और अंत में भावभरे ओजस्वी, तेजस्वी, जागृति भरते कहा– ''इस बढ़िया प्रेरणा–पुंज फिल्म को हर क्रांतिकारी, आजादी प्रेमी, युवा, को अवश्य देखना चाहिए। इसलिए हम देखकर आ रहे हैं।''

आजाद हँस पड़े। बिना नाराज हुए भोजन के पैसे दोबारा दिये। वाकचातुर्य चतुराई से प्रतिकूल परिस्थितियों को अपने पक्ष में किया जा सकता है।

– भीनमाल (राजस्थान)

पिचकारी जोड़ो के सही उत्तर

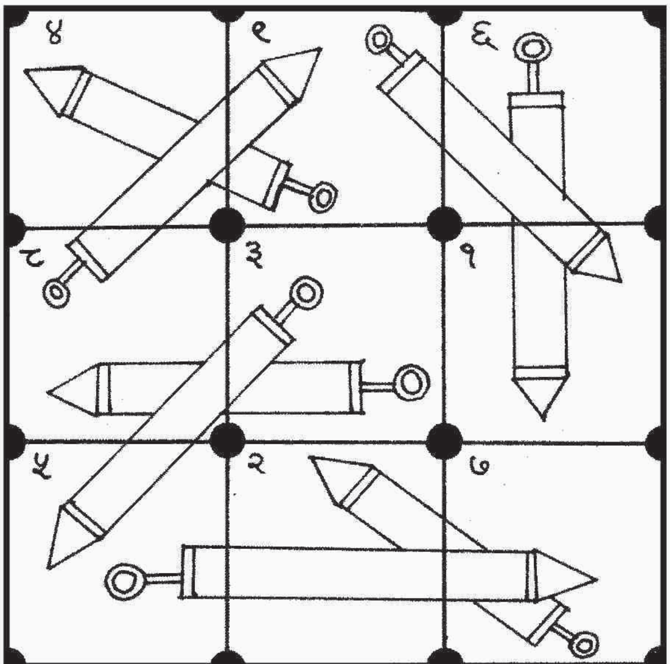

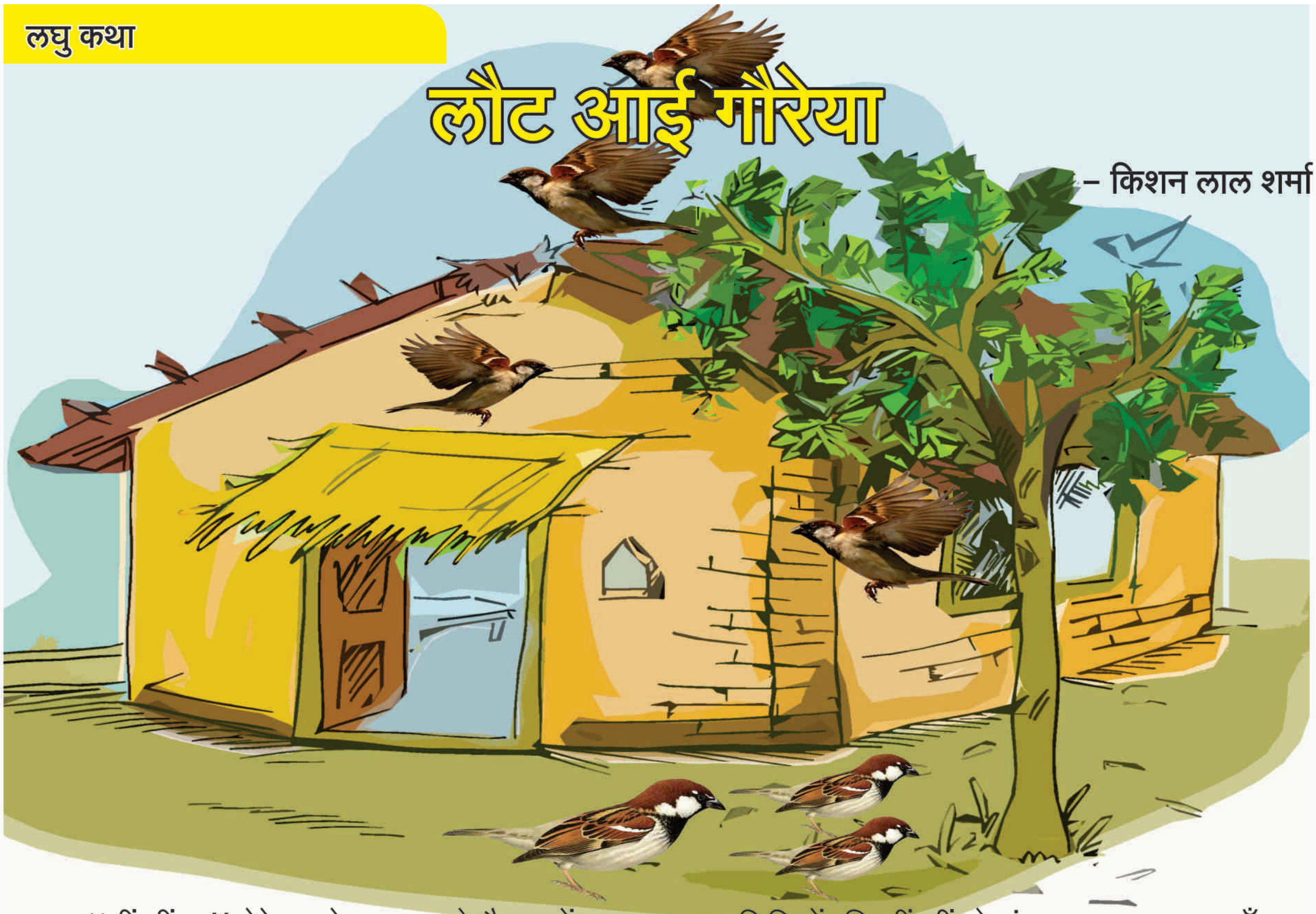

लौट आई गौरेया

– किशन लाल शर्मा

''चीं चीं....'' मेरे घर के घास वाले मैदान में एक अमरूद का पेड़ था। उस पर चिड़िया दिनभर चीं चीं करती रहती थी। पेड़ पर साल में दो बार अमरूद आते थे। ताजे–स्वादिष्ट–मीठे अमरूद।

लेकिन पेड़ से एक परेशानी भी थी। पेड़ काफी घना था, जिसके कारण दिन का प्रकाश घर में बहुत कम आ पाता था। सर्दियों में धूप तो बिल्कुल नहीं आती थी।

पत्नी कई बार पेड़ कटवाने को कह चुकी थी। लेकिन मैंने पेड़ कटवाने से स्पष्ट मना कर दिया। यह पेड़ मेरी बेटी ने अपने हाथ से लगाया था। बेटी ससुराल में हमसे दूर थी। वर्ष में एक बार ही आ पाती थी। यह पेड़ मुझे हमेशा बेटी की याद दिलाता रहता था।

पिछले दिनों गाँव गया, तो पत्नी ने पूरा पेड़ छँटवा दिया था। जिस पेड़ को मैं हरा–भरा छोड़कर गया, व ठूँठ सा खड़ा था। पेड़ छँटने से दिन में घर में रोशनी खूब आने लगी थी। सर्दियों के दिन थे, धूप भी घर में खूब आने लगी थी। लेकिन पेड़ पर चिड़ियों का आना बंद हो गया था। जो घर चिड़ियों की चीं चीं से गूंजता रहता था, वहाँ अब सन्नाट पसरा रहता था। पेड़ हरा भरा था, तो घर भी हरा भरा लगता था। पेड़ छँटने के बाद घर खाली–खाली सा लगने लगा था। अनाम सी खामोशी–सन्नाटा पसरा रहता।

दिन बीतने के साथ पेड़ पर डालियाँ फूटने लगी। छोटी–छोटी पत्तियाँ आने लगी थी। धीरे–धीरे पेड़ पहले की तरह हरा–भरा होने लगा। और आज लम्बे अंतराल के बाद पेड़ पर फिर से चिड़ियों के चहकने की आवाजें सुनाई दी थी। मेरा मन प्रफुल्लित हो उठा।

पेड़ मानव के लिए ही नहीं, पशु–पक्षियों के लिये भी उपयोगी है। पेड़ केवल पक्षियों के बसेरे के काम ही नहीं आते हैं। पशुओं का पेट भी रहते हैं। मानव को केवल प्राणवायु ही नहीं देते, मीठे फल और औषधियाँ भी इन्हीं से प्राप्त होती है। पेड़ प्रदूषण को भी दूर करते हैं। हमें पौधारोपण के साथ–साथ पेड़ों की रक्षा भी करनी चाहिए।

– आगरा (उत्तर प्रदेश)

पारितोषिक

– अनुपमा अनुश्री

अंशिता, आराधना और अवनी आज बड़े उत्साह में हैं। उनके लिए नए–नए ड्राईंग बॉक्स (रंग पेटिका) सुंदर–सुंदर पेन खरीदे गए हैं, परीक्षाएँ जो शुरू होने वाली हैं।

'आराधना' जो सबसे बड़ी बहन है कक्षा बारहवीं में, 'अंशिता' कक्षा दसवीं और सबसे छोटी, सबकी लाड़ली बहन 'अवनी' कक्षा आठवीं की परीक्षा देने जा रही हैं।

''माँ!.... तुम मेरे लिए जो ड्राईंग बॉक्स लाई हो। वह मुझे पसंद नहीं मुझे लाल रंग वाला ड्राईंग बॉक्स पसंद है।''

''अवनी! तुम हमेशा जिद करती हो। यह अच्छा तो है।''... माँ मनाते हुए बोली।

माँ को यह कहते सुना तो अंशिता बोल पड़ी– ''माँ! ठीक है तुम अवनी को मेरा लाल वाला ड्राईंग बॉक्स दे दो। मैं काला रंग वाला ले लूंगी।''

''अंशिता! तुम हमेशा उसकी जिद पूरी कर देती हो।'' माँ ने उलाहना दिया।

''माँ! क्या हुआ! अवनी हम सबकी लाड़ली बहन जो है।''

अंशिता की यह बात सुनते ही अवनी का चेहरा फूल सा खिल उठा। माँ भी उसके सिर पर हल्की सी चपत लगाकर मुस्कुरा दी।

माँ ने तीनों बहनों को बड़े लाड़–दुलार से उनकी चीजें सौंपते हुए सचेत किया कि अब तुम लोगों को मन लगाकर पढ़ाई करनी है।''

तीनों बहनें एक स्वर में बोल उठीं– ''हाँ माँ! लेकिन अगर हमने परीक्षा अच्छे अंकों से उत्तीर्ण की तो हमारा पारितोषिक क्या होगा?''

माँ मुस्कुराई... धीरे से बोलीं– ''तुम्हारा अच्छा काम ही होगा, तुम्हारा पारितोषिक।''

''माँ! नहीं, कृपया हमें बताइए ना! अवनी ने माँ के गले में बाहें डालते हुए मनुहार की।

''अवनी, अंशिता और आराधना! यह तुम सब के लिए सरप्राइज होगा। अब तुम लोग अपने कमरे में जाओ। अपना पूरा ध्यान पढ़ाई में लगाओ।''

माँ की मीठी सी झिड़की सुनकर तीनों बहनें अपने कमरे में जाकर पढ़ाई में और माँ भोजन बनाने में व्यस्त हो गईं।

परीक्षाएँ शुरू हुई। आराधना अपनी विज्ञान की परीक्षा देने में व्यस्त रही, वही अंशिता अपने पिताजी की मदद से अपने वाणिज्य के प्रश्नपत्र हल करती रही और अवनी अपनी छोटी–छोटी शरारतों के बावजूद अपनी बहनों और माँ की सहायता से पढ़ाई करती रही और परीक्षाएँ देने में व्यस्त रही।

आखिरकार परीक्षाएँ समाप्त हुई और तीनों बहनों की छुट्टियाँ आरंभ हुईं और साथ ही परीक्षा परिणाम की प्रतीक्षा।

''माँ!... यहाँ आओ, मेरी ओर से तुम कैरम खेलो।'' अवनी ने माँ को आवाज लगाई।

''अवनी! तुम अपनी बहनों के साथ खेलो। मुझे सफाई करना है बेटी!''

''माँ! तुम नहीं जानती अंशिता और आराधना मुझे जीतने नहीं देंगी। दोनों कैरम में बेईमानी कर रही हैं।'' अवनी ने ठुनकते हुए कहा।

अंशिता और आराधना गुस्से में लाल–पीली हो गई।

''माँ! अवनी झूठ बोल रही है। बेईमानी हम नहीं, यही कर रही है।''

''माँ!... तुम आ ही जाओ... अवनी की ओर से खेलने।'' आराधना ने कहा।

और माँ भी इस तरह के खेल में सम्मिलित हो गईं। चारों ओर शांति और स्नेह की बारिश।

आखिरकार वो दिन भी आ गया जब परीक्षा का परिणाम आना था जिसके लिए तीनों ही बेसब्री से प्रतीक्षारत थीं।

परीक्षा परिणाम शालाओं में पहुँच चुका था। विद्यार्थियों को अगले दिन परीक्षा फल प्राप्त करने हेतु बुलवाया गया था। तीनों से दूसरे दिन की प्रतीक्षा नहीं हो पा रही थी। राज जैसे आँखों ही आँखों में कट गई और सुबह हुई। तीनों ने तुरंत अपनी-अपनी तैयारियाँ की। भगवान से प्रार्थना की और शाला जाने की ओर बढ़ी।

माँ उनके उत्साह को देखकर मन ही मन शुभकामनाएँ दे रही थी। कि परीक्षा परिणाम शुभ और मंगलकारी हो। अंतत: बच्चों ने इतना परिश्रम किया है।

''माँ!.. हम लोग जा रहे हैं।'' तीनों बहनें तेजी से दरवाजे की ओर भागते हुए बोलीं।

अरे! अंशिता! आराधना! अवनी!.... रुको! पहले दही-शकर तो खाती जाओ।'' माँ ने आवाज लगाते हुए रोका।

''माँ! हमें देर हो रही है।'' कहते हुए तीनों ने जल्दी से दही शकर खाया और बाहर ही ओर भागीं।

''समाचार-पत्र माँ जी..।'' बाहर से हॉकर की आवाज आई।

''अभी आई।'' कहते हुए माँ बाहर आयीं।

मुख्य पृष्ठ पर प्रमुख समाचार, जो कि राजनीतिक दलों के बारे में थी। अचानक नीचे की ओर दृष्टि पड़ी तो अंशिता, आराधना, अवनी तीनों के छायाचित्र बधाई पत्र के साथ प्रकाशित हुए थे।

आश्चर्य मिश्रित प्रसन्नता से माँ की आँखें खुली रह गई और पूरा समाचार पढ़ डाला। तीनों बहनों ने अपनी-अपनी कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया था। शाला के प्रधानाध्यापक और सभी शिक्षकों ने बधाई दी थी।

माँ अत्यन्त प्रसन्न हुईं और छलकती आँखों से बच्चियों के आने की प्रतीक्षा करने लगीं।

''माँ!'' तीनों बहनों की सम्मिलित आवाज और उसमें छलकती प्रसन्नता। तीनों के हर्ष का ठिकाना नहीं था। तीनों माँ के गले लगकर बोलीं- ''माँ! हम तीनों का परीक्षा परिणाम आ गया है। हम तीनों अपनी-अपनी कक्षाओं में प्रथम स्थान पर आई हैं।''

माँ ने मुस्कुराते हुए तीनों को गले लगा लिया और कहा- ''मुझे ज्ञात है। मुझे अभिमान है तुम तीनों पर।''

''माँ! हमारा पारितोषिक कहाँ है?'' अवनी ने झट से पूछ लिया।

माँ ने समाचार-पत्र तीनों के आगे रख दिया। तीनों अपने चित्र देखकर खुशी से चिल्ला उठीं।

आराधना ने पलक झपकते ही समाचार पढ़ डाला।

''अवनी! आराधना! अंशिता! आज मुझे तुम तीनों पर बहुत गर्व है और आज तुम तीनों ने मुझे बहुत बड़ा पारितोषिक दिया है।'' गर्वमिश्रित, सुखद अनुभूति से माँ की आँखें छलकने लगीं। आराधना, अवनी और अंशिता माँ के गले लगकर बोलीं- ''माँ...तुम्हारी आँखों से छलकती खुशी ही इस बार हम सबका पारितोषिक है, पुरस्कार है।''

और हँसी और प्रसन्नता की गूँज से घर मुस्कुराने लगा।

- भोपाल (म. प्र.)

मेजर रामा स्वामी परमेश्वरन

भारत श्रीलंका शांति समझौते के पश्चात ३० जुलाई १९८७ को उनकी बटालियन को जाफना प्रायद्वीप भेजा गया था। यह बटालियन ८ महार, ९१ इन्फैंट्री ब्रिगेड एवं ५४ इन्फैंट्री डिविजन के एक अंग के रूप में 'ऑपरेशन पवन' के लिए चयन की गई थी और इसे भारतीय शांति सेना की श्रीलंका की धरती पर उतरने वाली प्रथम बटालियन होने का अवसर मिला था। एलटीटीई के विरुद्ध मरूथनमदम, अन्नाई कोटाई मनीपाई और कान्तारोदाई जैसी प्रमुख कार्यवाईयों सहित अनेक अभियानों में यह बटालियन सक्रिय रही।

कान्तारोदाई की लड़ाई तो मेजर रामास्वामी परमेश्वरन् के अतुल्य शौर्य का इतिहास बन गई।

वह २४ नवम्बर १९८७ की तारीख थी। जब उनकी बटालियन को संदेश मिला कि कई हथियारों व गोलाबारूद का एक जखीरा कान्तारोदोई के एक गाँव के मकान पर उतारा गया है। २५ नवम्बर रात्रि १.३० बजे बटालियन पहुँची तो मकान सुनसान पड़ा था केवल एक ट्रक जो कि खाली था मकान के पास खड़ा था। घेरा बंदी कर ली गई। प्रात: तलाशी लेने का निर्णय हुआ।

२५ नवम्बर सुबह ५.३० बजे थे मकान की खोजबीन में कुछ नहीं मिला। बटालियन ने लौटने का निर्णय लिया। तभी पास के मंदिर वाले क्षेत्र से दनादन गोलीबारी प्रारंभ हो गई। उत्तर दिया जा रहा था एक भारतीय जवान शहीद हुआ दूसरा घायल था। मेजर रामास्वामी परमेश्वरन का आदेश पाकर कैप्टन डी. आर. शर्मा भारी गोलीबारी करके दुश्मन को रोके हुए थे। एक–एक घर की तलाशी भी करते जा रहे थे। मेजर अपने दल के साथ मंदिर के पीछे एल.टी.टी.ई. के अड्डे को घेरने पश्चिम से आगे बढ़े।

कैप्टन शर्मा को मंदिर के इलाके से नारियल के पेड़ों की आड़ से स्वचालित हथियारों की गोलाबारी झेलना पड़ रही थी। सड़क के पश्चिमी मकानों को खाली कराने पर उग्रवादी अपने मरे–अधमरे साथियों को ढोते दिखाई दिए। उधर मेजर का दल नारियल के पेड़ों के पीछे दुश्मन की पीठ पर जा पहुँचे थे। एक उग्रवादी ने उनकी छाती अपनी गोली से वेध दी पर वे घाव की परवाह किए बगैर शत्रुओं को घेर चुके थे। उस उग्रवादी की राइफल छीन व उसी को यमलोक पहुँचा चुके थे। दोनों पक्षों की भारी क्षति हो रही थी। दो तरफा घिरे उग्रवादी जंगल में भागे। छ: के शव मिले। असला मिला। मेजर का अद्‌भुत शौर्य उन्हें परमवीर चक्र का हकदार बना गया।

आओ, आओ खेलें खेल

– चाँद मोहम्मद घोसी, मेड़ता सिटी– (राज.)

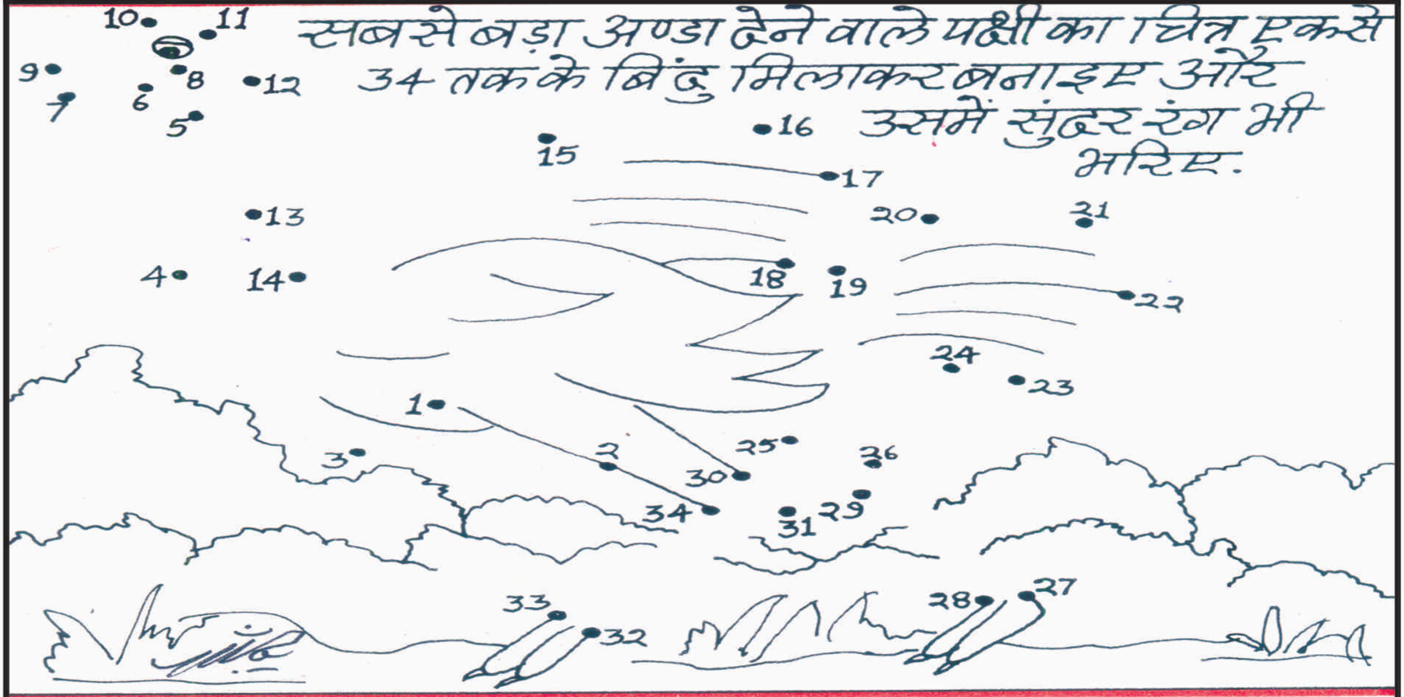

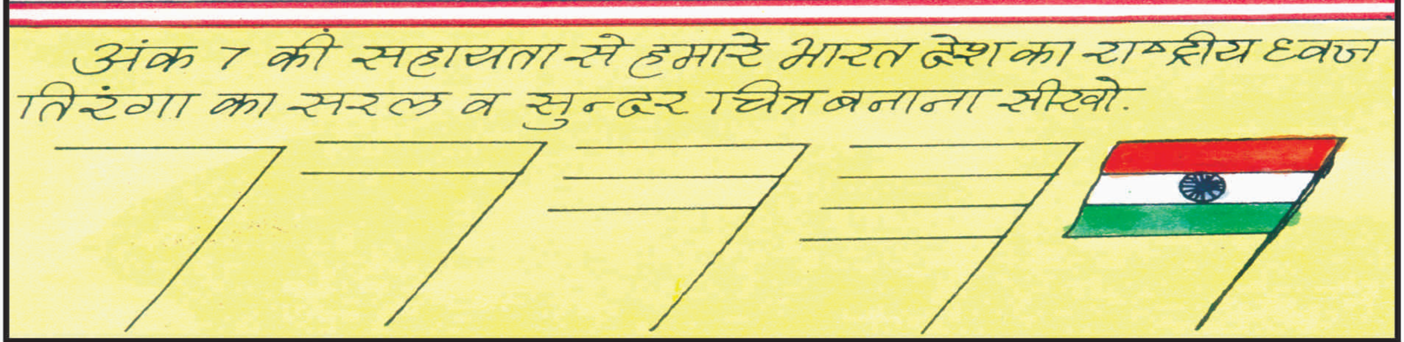

'देवपुत्र' जनवरी २०२१ का अंक डाक द्वारा मुझे प्राप्त हुआ। बहुरंगी, सुन्दर, कलात्मक, शिक्षाप्रद कहानियाँ, आलेख, लोककथाएँ, बाल लेखनी, कविताएँ, चित्र कथाएँ आदि स्तम्भों ने मन मोह लिया। **'देवपुत्र'** व आपके श्रम की जितनी प्रशंसा की जाए वह कम है। मेरी ओर से हार्दिक बधाई व शुभकामनाएँ। साभार हार्दिक धन्यवाद।

– चांद मो. घोसी (मेड़तासिटी)

'देवपुत्र' के जनवरी अंक में कहानी 'किसलय और निलय' प्रकाशित हुई। कहानी के सदस्य इसे देवपुत्र में पढ़कर आनंदित हुए। कहानी में यथायोग्य परिवर्तन और चित्रांकन भी सराहनीय था जिससे कहानी और अधिक रोचक एवं देवपुत्र सही अर्थों में प्राचीन भारतीय संस्कृति को पुन: पुनर्जीवित करने का प्रयास कर रही है। देवपुत्र का प्रकाशन अन्य भारतीय भाषाओं में भी होना चाहिए साथ ही साथ भारत के सभी विद्यालय अधिक से अधिक लाभान्वित हो सके और भारतीय संस्कृति पर गर्व कर सके।

– नीतेश चौधरी,
देवगढ़ (झारखण्ड)

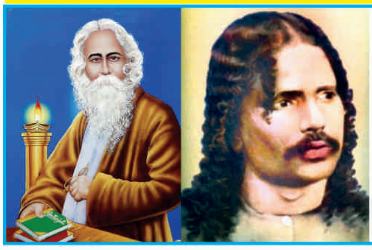

निराले हैं कवियों के ढंग

– डॉ. हनुमान प्रसाद उत्तम

कहा जाता है कि कवियों के मूड का कोई भरोसा नहीं होता। वह कब किस दुनिया में रहते हैं, यह वह स्वयं भी नहीं जान पाते। इनके लिखने की आदतें भी विचित्र हुआ करती हैं।

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर बड़ी ही सुंदर हस्तलिपि में लिखा करते थे। अगर लिखने के बीच में उन्हें कोई काट–छाँट करनी पड़ती थी, तो वे उसको घेरकर आड़ी–तिरछी रेखाओं में कोई न कोई आकृति बना दिया करते थे।

भारतेंदु हरिश्चन्द्र सप्ताह के प्रत्येक दिन अलग–अलग रंग के कागज पर कविताएँ लिखते थे। उन्होंने इन कागजों का रंग ग्रहों के अनुसार निर्धारित किया था।

छायावाद के प्रमुख कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का मूड और उनकी मस्ती प्रसिद्ध है। वे एक फक्कड़ और मस्त मौला इंसान थे। लेकिन कम ही लोग जानते हैं कि निराला जी अपनी कविताएँ हमेशा बिस्तर पर पेट के बल लेटकर लिखते थे।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त अपनी कविताओं को सबसे पहले स्लेट पर खड़िया से लिख लिया करते थे। फिर उनमें सुधार कर अंतिम रूप से कागज पर उतारते थे। राष्ट्रकवि की एक आदत यह भी थी कि वे पृष्ठ के शीर्षभाग पर श्रीराम अवश्य लिखते थे।

– कानपुर (उ. प्र.)

संस्कृति प्रश्नमाला

- *जनकपुरी में शिवजी का धनुष टूट जाने के बाद कौन श्रीराम पर क्रोधित हो गया?*
- *महापराक्रमी अर्जुन के धनुष का क्या नाम था?*
- *किस देश की राजधानी के विमान–तल के बाहर समुद्र–मंथन का दृश्य दिखाती विशाल प्रतिमा लगी है?*
- *किस पर्वत को दक्षिण भारत का कैलास कहा जाता है? यहाँ महर्षि रमण ने तपस्या की थी।*
- *अब तक अपने देश में कितने तीर्थंकर हुए हैं?*
- *किनके शासन–काल में मेगस्थनीज यूनान के राजदूत के रूप में भारत आया था?*
- *प्रसिद्ध पाइथोगोरस प्रमेय (कर्ण^2 = आधार^2 + लम्ब^2) का उल्लेख करने वाला भारत का सबसे प्राचीन ग्रंथ कौन सा है?*
- *प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में फाँसी का पुरस्कार पाने वाले जगत सेठ कौन थे?*
- *मुगल बादशाह शाहजहाँ के भरे दरबार में सलाबत खान का सिर काट देने वाला मारवाड़ का महावीर कौन था?*
- *हैफा बन्दरगाह किस देश में है?*

(उत्तर इसी अंक में)

(साभार : पाथेय कण)

चूहों से छुटकारा
चित्रकथा: देवांशु वत्स
एक दिन...
राम, इन चूहों से तो मैं तंग आ चुका! समझ में नहीं आता कि क्या करूं?
ओ...
काका, एक बिल्ली क्यों नहीं पाल लेते!
अरे वाह!
दो दिनों बाद...
यह आलसी बिल्ली चूहे तो पकड़ती नहीं, उल्टे सारा दूध भी चट कर जाती है!
एक मिनट...
थोड़ी ही देर में...
आलसी बिल्ली को सबक सिखाने के लिए यह कुत्ता ठीक रहेगा!
धन्यवाद बेटा!
दूसरे दिन...
अब क्या हुआ काका?
उस कुत्ते ने मेरे पड़ोसी को काट खाया! मुझे हजार रुपए देने पड़े! गुर्र्रर्र...
बाप रे! भागो!!

गदहे की सूझ–बूझ

– तपेश भौमिक

एक धोबी के पास एक गदहे था। वह उम्र बीतने के कारण बूढ़ा हो गया था एवं ऊपर से धोबी का बोझ ढोते–ढोते शीघ्र की कमजोर भी पड़ गया था। धोबी ने उसे बेचना चाहा लेकिन बूढ़े गदहे को कौन खरीदे। वह अब उसे ठीक ढंग से चारा–भूसा भी न देता। एक दिन एक घास चरते–चरते गाँव से थोड़ी दूर जंगल के किनारे चला गया। वहाँ एक पुराना कुआँ था जो अधिक गहरा न था। भीतर पानी भी इतना था कि कोई गिरे तो डूबे नहीं। प्राय: मैदान में चरने वाली बकरियाँ घास चरते–चरते प्यास लगने पर उस कुएँ में उतर जाती और प्यास बुझाकर एक ही उछाल में बाहर निकल आती थीं।

गदहा अक्सर बकरियों के साथ ही चरा करता था। उसके जैसे बुजुर्ग के रहने पर बकरियाँ अपने–आप को सुरक्षित महसूस करती थीं। गदहे को देखकर जंगल की लोमड़ियाँ भी डरती थीं। गदहा प्राय: यह सोचता कि चलो एक दिन मैं भी उस कुएँ का पानी चखकर तो देखूँ। लगता है बड़ा स्वादिष्ट है।

उस दिन गदहे को घास चरते–चरते प्यास कुछ अधिक ही लग गई थी। उसने भी बकरियों की देखा–देखी कुएँ में छलांग लगा दी। छलांग लगाने पर घुटने में थोड़ी–सी चोट लग गई। दर्द के मारे उसने 'ढेंचू–ढेंचू' चिल्लाया। आस–पास कोई गदहा तो था नहीं जो उसकी भाषा समझे। फिर उसने भर पेट पानी पी लिया तो शरीर और भारी हो गया। अब उसने बाहर निकलने के लिए उछाल लगाई तो बाहर न निकल सका। वह धड़ाम से पानी में चारों खाने चित्त होकर गिर पड़ा। सारा शरीर कीचड़ से लथ–पथ हो गया। ऊपर से चोटिल पैर को फिर से चोट लग गई। इससे पैर और अधिक दुखने लगा।

मैदान में चरने वाली सारी भेड़–बकरियाँ अपने–अपने घर लौट गईं। किसी ने उसकी ओर मुड़कर भी नहीं देखा। उसने केवल यही सोचा कि बूढ़े हो जाने पर मनुष्य की भी दुर्दशा हो जाती है, और मैं तो ठहरा गदहा!

''हमारा गदहा अब तक घर नहीं लौटा है, देखो तो जरा, वह बेचारा कहीं अटक गया क्या?'' धोबिन ने चिंता व्यक्त की। ''नहीं लौटा है तो जाने दो, वह कौन–सा काम का रह गया है! हमें तो इसे बेचना ही था।'' धोबी ने पल्ला झाड़ते हुए कहा।

''नहीं, ऐसी बात नहीं है; उसने सारी उम्र हमारी सेवा की है। हमारा कर्त्तव्य बनता है कि उसकी हम सही देख–भाल करें।'' धोबिन ने समझाते हुए कहा।

''ठीक है, ठीक है! जाता हूँ।'' धोबी ने कुछ गुस्से से कहा।

अब धोबी ने अपने कुछ साथियों को साथ लेकर गदहे की खोज में निकला। कुछ इधर–उधर खोजबीन की; गधा नहीं मिला। तब वे कुएँ की ओर बढ़ निकले।

कुएँ के ऊपर कुछ झाड़ियाँ भी थी जिसके कारण कभी–कभी भारी भरकम बकरियाँ या गाय–भैंस के बछड़े उसमें गिर जाते और बाहर नहीं निकल पाते थे। गाँव के लोग उनके घर न पहुँचने पर प्राय: कुएँ के पास आकर अवश्य झाँक जाते, वे अपने मवेशी को कुछ मेहनत–मशक्कत के बाद निकाल ले जाते। उस समय यह तय करते कि उस अंधे कुएँ को मिट्टी और गंदगी डालकर ढक दिया जाए जिससे मवेशी गिरे नहीं पर बाद में उस बात को कल के लिए टाल देते।

गदहा अब भी प्रयास किए जा रहा था। वह जितनी उछाल लगाता उतना ही अधिक चोटिल हो जाता। बीच–बीच में कराहता जाता पर कोई न आता। अचानक उसने कुछ लोगों के आने की बातें सुनी तो जोर–जोर से चिल्लाने लगा। धोबी के साथ उसके कई साथी भी वहाँ आयें। सबने मिलकर गदहे को बाहर निकालने का प्रयास किया पर वह बार–बार दर्द के मारे निढाल हो जाता जिससे फिर से नीचे आ जाता।

''धोबी भैया! एक बात कहूँ?'' एक किसान ने कहा।

''हाँ भई, अवश्य बोलो।'' धोबी ने परेशानी से कहा।

''इस गदहे को निकालने के लिए मोटे रस्से लाने पड़ेंगे। उससे बांध कर ही निकाला जा सकता है इसे। इसके लिए रस्से खरीदने होंगे तथा और लोगों को भी बुलाना पड़ेगा।'' किसान ने कहा।

''चलो, ऐसा ही करते हैं।'' धोबी ने उतावलेपन से कहा।

''कहीं तुमसो सोचा भी है कि मोटा रस्सा खरीदने के लिए शहर जाना होगा, लौटते-लौटते तो रात हो जाएगी, ऐसा करो कि...।''

''गदहा तो बूढ़ा हो गया है, यह किसी काम का न रहा।'' दूसरे ने कहा।

''हमें तो इस कुएँ को भरना ही था, इसलिए एक काम करते हैं, इस गदहे को ही जीवित ही दबा देते हैं। कुआँ भी भर जाएगा और उसे भरने के लिए मिट्टी भी कम लगेगी।'' तीसरे ने कहा।

''हाँ भई, ठीक ही कहते हो। एक पंथ, दो काज। इससे मिट्टी भी कम लगेगी और गदहे से भी तुम्हें छुट्टी मिल जाएगी।'' चौथे ने कहा।

''आपदा और विपत्ति दोनों टल जाएगी।'' किसी ने सलाह दी।

धोबी भी उससे छुटकारा पाना चाहता ही था। इसलिए उसने ''हाँ'' कह दी।

बेलचा-कुदाल मँगाए गए। सब लोग अगल-बगल से मिट्टी काट-काटकर लाने लगे और कुएँ में डालने लगे। कुछ मिट्टी गदहे के देह पर भी गिरने लगी, इससे वह समझ गया कि मामला कुछ गड़बड़ है। उसकी तो डर के मारे बुरा हाल था। वह थर-थर काँपने लगा। अब गदहे के दिमाग में एक बुद्धि आई।

कहते हैं न कि जब जान जोखिम में हो तो बचने के कई बहाने बन जाते हैं। कोई-न-कोई रास्ता मिल ही जाता है। तब सूझ-बूझ का रास्ता अपनाने से जान बच जाती है। अब जब-जब कुएँ में मिट्टी और गंदगी गिराई जाती तब-तब गदहा अपनी देह को झाड़ता जाता और मिट्टी के ऊपर आता जाता। इस प्रकार वह काफी ऊपर आ चुका था। यह देखकर सब चकित हो गए। कुछ देर तक मिट्टी और डाली गई तो गदहा और कुछ ऊपर आ गया। अब उसने आव देखा न ताव, साहस के साथ एक भरपूर उछाल लगाई!...... और वह अब बाहर था।

उसे भी अब समझ में आ गया था कि जब कोई कमजोर पड़ जाता है, तो कुछ लोग उसकी सहायता के बजाए और संकट में डालने का प्रयत्न करते हैं। गंदगी को झाड़ फेंकना और उसे दबाकर बाहर निकलना ही सही सूझ-बूझ का काम होता है।

- गुड़ियाहाटी (पं. बंगाल)

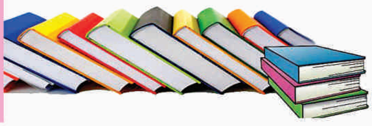

पुस्तक परिचय

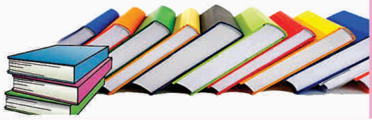

श्री. पंकज चतुर्वेदी बाल साहित्य जगत में अपने विशिष्ट प्रकार के लेखन के लिए सुपरिचित नाम है। नेशनल बुक ट्रस्ट ऑफ इण्डिया नई दिल्ली से जुड़कर आपका दायित्वपूर्ण अवदान बाल साहित्य की अनेक पुस्तकों के रूप में प्रसिद्ध हुआ। 'पुस्तक परिचय' के इस स्तंभ में उन्हीं की कुछ कृतियों का परिचय प्रस्तुत है। आपकी कृतियाँ विभिन्न प्रकाशनों ने प्रकाशित की है–

क्यों डूबी पनडुब्बी
मूल्य ११०/–

बारह रोचक कहानियों के संग्रह के रूप में आपकी यह कृति सूचना और प्रसारण मंत्रालय सूचना भवन सी.जी.ओ. कॉम्प्लेक्स लोधी रोड नई दिल्ली ने प्रकाशित की है।

बेलगाम घोड़ा
व
अन्य कहानियाँ
मूल्य १००/–

शरारे प्रकाशन बी.बी./६बी. जनकपुरी नई दिल्ली से प्रकाशित इस संग्रह में आपकी आठ कहानियाँ है जो आपका भरपूर मनोरंजन करेंगी।

ढेर सारे दोस्त
मूल्य २७/–

लखनऊ उ. प्र. के नमन प्रकाशन २१० चिंटेल्स हाउस १६ स्टेशन रोड से प्रकाशित इस सम्पूर्ण बहुरंगी चित्रमय में बालमन में पक्षी–प्रेम जगाती रोचक कहानी है।

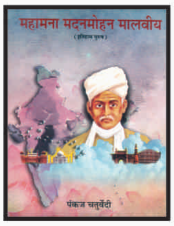

महामना मदनमोहन मालवीय
मूल्य ४०/–

मालवीय जी के विराट व्यक्तित्व एवं जीवनी पर प्रकाश डालती यह कृति भारतीय ज्ञानपीठ १८ इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोधी रोड, नई दिल्ली ने प्रकाशित की है।

लो आ गई गर्मी
मूल्य ४८/–

होली के त्यौहार की उमंग में गर्मी की दस्तक सुनाई देती है। यह सम्पूर्ण बहुरंगी व चित्रात्मक कथा इसी के आनंद के रंग में सराबोर है।

लघु कहानी

खाने वाले फूल

देवांश एक पत्रिका में पौराणिक कथा पढ़ रहा था। कहानी में एक स्थान पर लिखा था कि मुनि के आश्रम में शिष्य फल-फूल खाकर भी पेट भर लेते थे और कई बार चिकित्सा के लिए भी फूलों का प्रयोग किया जाता था। देवांश को अचरज हुआ। उसने दादाजी से कहा- ''दादाजी! क्या यह सही है कि फूल भी खाए जा सकते हैं?'' दादाजी बोले- ''हाँ बेटा! बिल्कुल। भले ही आमतौर पर हम फूलों को सजावट या पूजा-पाठ के लिए ही उपयोगी मानते हैं। लेकिन इनका खाने में और औषधीय में भी भरपूर प्रयोग होता है। बंगाल और दक्षिण भारत में केले के फूलों से स्वादिष्ट सब्जी और कई पकवान बनाए जाते हैं। थाईलैण्ड में तो इन्हें कच्चा ही खा लेते हैं। दक्षिण-पूर्वी एशिया में कई व्यंजनों में इनका उपयोग होता है। इनमें प्रचुर मात्रा में विटामिन और मिनरल भी होते हैं। इसी प्रकार मोरिंगा के फूलों की मशरूम की तरह स्वादिष्ट सब्जी बनती है और उन्हें दाल, ग्रेवी, साम्बर, सूप आदि में डालते हैं। कई लोग इन्हें चटनी, कटलेट और केक में भी डालते हैं। कई प्रदेशों में पपीते के फूल भी खाए जाते हैं जो एंटीऑक्सिडेंट से भरपूर होते हैं।''

दादाजी की बात सुनकर देवांश की उत्सुकता और बढ़ गई। उसने पूछा- ''दादाजी! ये तो अलग तरह के फूल हुए। आप मुझे ये बताएँ कि गुलाब, चमेली, कमल और जपा यानी हिबिस्कस जैसे सामान्य फूलों के औषधीय गुण क्या हैं या इन्हें खाना संभव है या नहीं।''

दादाजी मुस्कुराकर बोले- ''शरारती बालक! तुम मेरी परीक्षा तो नहीं ले रहे कहीं? चलो! यह भी बता ही दूँ। जैसमीन यानी चमेली में एंटीऑक्सीडेंट्स भरपूर मात्रा में होते हैं। यह वाटर रिटेंशन की समस्या में भी लाभदायक हो सकता है। कुछ अध्ययनों से पता चला है कि जैसमीन की चाय शरीर में अच्छे कोलेस्ट्रॉल का स्तर बढ़ाती है और बुरे कोलेस्ट्रॉल का स्तर घटाती है। यह फूल मन शांत रखने के लिए भी उपयोगी माना जाता है। लेकिन इसकी केवल जैस्मीन सैम्बैक प्रजाति ही खाने योग्य होती है। गुलाब की पत्तियों को मिठाई, बूंदी आदि में मिलाया जाता है, इससे गुलकंद बनता है साथ ही यूनानी चिकित्सा में इसका में इसका लेक्सेटिव के तौर पर यानी पेट साफ रखने में खूब प्रयोग होता है। यह ठण्डी तासीर का फूल है। इसीलिए गर्मियों में इसका शरबत बनाकर पिया जाता है। गुलाबजल स्किन को ताजा और हाइड्रेटेन रखने का अच्छा माध्यम है। गुलाब का अर्क साफ पानी में मिलाकर लगाया जाय तो खुजली और चेहरे पर जलन आदि में आराम मिलता है। कमल का फूल विटामिन बी, सी और फॉस्फोरस का समृद्ध स्त्रोत है। यह एसिडिटी, अल्सर, हाई ब्लडप्रेशर, एंग्जायटी आदि समस्याओं के साथ-साथ स्प्लीन और लीवर रोगों में फायदेमंद माना जाता है। कमल की जड़ हेमरेज से होने वाले रक्तपात में फायदेमंद होती है। इसके सेवन से क्लॉटिंग जल्दी होती है और अधिक खून नहीं बहता। जबकि हिबिस्कस यानी जवा फूल को उबालकर ठंडा किया हुआ पानी पीने से रक्तचाप और कोलेस्ट्रॉल पर नियंत्रण पाया जा सकता है। इसके सेवन से लिवर का डिटॉक्सीफिकेशन भी होता है। इसमें उपस्थित विटामिन सी की प्रचुर मात्रा रोग प्रतिरोधक क्षमता (इम्यूनिटी सिस्टम) को बढ़ाती है। इसके फूल को कई लोग नियमित खाते हैं।''

दादाजी की बातें सुनकर देवांश प्रसन्न हो गया। उसने खुशी से उछलते हुए कहा- ''दादाजी, आपके द्वारा बतायी जानकारी मैंने स्मार्टफोन में रिकॉर्ड कर ली है। अब कल अपने मित्रों को बताकर खूब वाहवाही लूटूँगा।''

- कोलकाता (प. बंगाल)

विनाशाय च दुष्कृताम्

– आनन्द मिश्र 'अभय'

पुण्यतोया गोदावरी का सुरम्य तट। प्रात:कालीन सूर्य की स्वर्ण–पीत–रश्मियाँ अभी वृक्षाग्रों पर ही अठखेलियाँ कर रही थीं। शीतल–मन्द–पवन का संस्पर्श शरीर को रोमाचिंत कर रहा था। एक ओर क्रमश: उच्चतर होती गयी पर्वतमाला, जिस पर वृक्षों की पंक्तियाँ उन्नतशिर खड़ी थीं मानो आशंकित वन्य–पशु, आकस्मिक आक्रमण से बचाव हेतु सतर्क खड़े हों। दूसरी ओर बालुकामय सपाट तट से हटकर शस्य–संकुलित खेतों की पंक्तियाँ। हेमन्त का अन्त और शिशिर का प्रारम्भ हो रहा था।

एक साधु जल–धारा में खड़ा भगवन्नाम का जप कर रहा था। स्नान कर चुका था। भगवान सूर्य को अर्घ्य अर्पित कर जैसे ही वह जल से बाहर आया और चलने को हुआ अकस्मात् उसके शरीर पर एक लिजलिजी वस्तु आ पड़ी। घूमकर देखा तो अट्टहास करता हुआ एक व्यक्ति दिखायी दिया, काला सा रंग, तहमद बांधे। शरीर की ओर देखा तो गाय की अन्तड़ियों को गले से निकाल कर फेंक दिया और पुन: नदी में डुबकी लगाने लगा। चेहरे पर किसी प्रकार के क्रोध की झलक तक नहीं।

साधु स्नान कर जैसे ही फिर चला कि तहमद पहने वह काला–सा आदमी पुन: उसके ऊपर गाय की अन्तड़ियाँ फेंक गया। यह और कोई नहीं एक कसाई था, जो मजहबी घृणा के उन्माद में साधु–पुरुष को इस प्रकार बार–बार अपवित्र करके प्रसन्न हो रहा था। साधु तो साधु ही ठहरा। उस पर कोई प्रतिक्रिया नहीं। कसाई बार–बार उस पर अन्तड़ियाँ फेंकता वह हर बार स्नान करता जाता।

यह क्रम चल ही रहा था और न जाने कब तक चलता रहता, किन्तु इतने में एक तलवार बिजली सी चमकी। साधु ने देखा दुष्ट कसाई का सिर धड़ से अलग जा कर धूल में लोट रहा था। तलवार से रक्त टपक रहा था और एक तेजस्वी तरुण उनके चरणों में प्रणाम करता हुआ नतशिर खड़ा था। तरुण के वस्त्र भीगे हुए थे, उनसे पानी टपक रहा था। चेहरे पर रक्तिम आवेश ओंठ रोष से फड़फड़ा रहे थे।

''भगवान! आप इस दुष्ट का यह अत्याचार यों ही सहन करते रहे; आपको किसी प्रकार का क्रोध क्यों नहीं आया?'' तरुण ने प्रश्न किया। उसका चेहरा अब भी क्रोध से तमतमा रहा था।

''वीरवर! इसमें क्रोध की क्या बात? इसके कारण मुझे आज एक सौ आठ बार गोदावरी के जल में स्नान करने का पुण्यलाभ मिला।'' साधु का उत्तर था।

''भगवन्! आपकी इस सहिष्णुता के कारण ही क्या इस नीच को ऐसा कुकृत्य करने का दुस्साहस नहीं हुआ? आपको इसका तुरन्त प्रतिकार करना चाहिए था।'' तरुण बोले जा रहा था।

''नहीं वीर! मैं ऐसा नहीं सोचता। इसकी दुष्टता से भी मुझे तो लाभ ही हुआ।'' साधु ने भोलेपन से उत्तर दिया।

तरुण चकित था। कैसा विचित्र है यह साधु! कोई क्रोध नहीं, कोई आवेश नहीं। इस हिन्दू समाज में यदि आततायियों के अत्याचार को भी पुण्य लाभ का साधन समझने वाली ऐसी बुद्धि न होती तो क्या ये विधर्मी इस प्रकार नि:शंक होकर अत्याचार करने की धृष्टता कर सकते थे? जो समाज ऐसे धर्म–गुरुओं से प्रेरणा ग्रहण करता हो, उससे यदि नपुँसकता, निर्वीर्यता एवं निर्जीवता न आ जाय, तो ही आश्चर्य की बात होती। ऐसे महात्मा के अन्त:करण की निश्छलता, अमर्षहीनता, प्रभुशक्ति की गहनता एवं अजातशत्रुता के भाव का

तत्वज्ञान तो लोग समझते नहीं, उलटे दुष्टों की दुष्टता एवं आततायियों के अत्याचार को सतत सहन करते रहने की भ्रान्ति भाग्यवादिता को ही धर्म समझ बैठने की महती भूल कर बैठते हैं। जो समाज अपने साधु–महात्माओं, धर्म गुरुओं एवं धर्म स्थानों की रक्षा नहीं कर सकता, उसे इस भूमि से तिरोहित होने में कितनी देर लगेगी? विचारों के इसी ऊहापोह में वह तरुण मग्न था कि साधु उसे आशीर्वाद दे चल दिया। विचारों की भावभूमि से यथार्थ में उतरते ही उसने जो कुछ देखा, उससे समझ गया कि कसाई ने थोड़ी देर पहले ही एक गाय काटी थी और वह उस गाय की आँतें नदी की धारा में धोने आया था। एक हिन्दू महात्मा को धारा के ऊपरी भाग में स्नान करते देख उसे यह शरारत सूझी। चतुर्दिक मुसलमानों का शासन था। अत: उसे भय किस बात का? कोई हिन्दू प्रतिकार करेगा, यह तो वह सोच ही नहीं सकता था। साधु यदि प्रतिरोध करता, तो उसे भी हलाल करने का उसे सहज की अवसर सुलभ हो जाता।

तरुण नदी के दूसरी ओर एक वृक्ष के नीचे विश्राम कर रहा था। तीव्र ज्वर से शरीर उत्तप्त हो रहा था। रात्रि पर्यवेक्षण के अनन्तर वापस दुर्ग की ओर लौट रहा था; पर ज्वर की तीव्रता के कारण कुछ देर पेड़ के नीचे लेटकर विश्राम करने लगा था। थोड़ी दूर पर अश्व घास चर रहा था। तरुण ने जैसे ही करवट ली, नदी के पार दूसरे तट पर हो रही यह घटना उसकी दृष्टि में आ गई, देखता रहा, देखता रहा और फिर विद्युत गति से नदी में कूद गया। मुँह में तलवार दाबे वह उस पार पहुँच गया। इसे न तो दुष्ट कसाई देख पाया और न वह साधु। तलवार चलाने की एक छपाक की ध्वनि और पलक झपकते कसाई की गर्दन साफ। गोहत्या एवं साधु प्रताड़ना–दोनों कुकृत्यों का प्रतिशोध करने के साथ ही तरुण का ज्वर भी शांत हो चुका था।

साधु का तो पता नहीं लेकिन तरुण था भावी स्वराज्य संस्थापक शिवाजी। –

सेठजी की सलाह

– रीता जैन

राजस्थान के किसी गाँव में एक अत्यन्त धनी सेठ रहा करते थे। उन दिनों देश में अकबर का शासन था। एक बार सेठजी ने बादशाह अकबर की सेवा में कुछ उपहार भेजने की बात सोची। उन्होंने बादशाह के लिये अच्छे–अच्छे उपहार एकत्रित किये और उनको लेकर जाने के लिये अपने सर्वाधिक बुद्धिमान एवं विश्वस्त मुनीम को चुना।

जाने के एक दिन पूर्व सेठजी ने मुनीमजी को बुलवाया। उनको उपहारों के बारे में बताया और उन्हें संभालकर ले जाने के बारे में जानकारी दी। जाते समय मार्ग में रखी जाने वाली सावधानियों के बारे में भी समझाया। बादशाह के दरबार में पहुँचकर किस तरह का आचरण करना उचित होगा यह भी बताया। सेठजी की प्रत्येक सलाह पर मुनीमजी 'जी हाँ', 'जी हाँ' कहकर सिर हिलाते रहे।

सेठजी की सलाहें पूरी हो जाने पर मुनीम जी घर जाने को उद्यत हुए। चलते–चलते फिर सेठ जी ने उनसे कहा कि वे सभी बातों का ध्यान रखे। इस पर मुनीम जी मुस्कुराकर बोले– ''सेठ जी की सलाह दरवाजे तक।''

''क्या मतलब?'' सेठ जी आश्चर्य चकित हो गये।

''मतलब यह सेठ जी! कि आपकी सलाह इस घर के दरवाजे तक ठीक है, आगे तो परिस्थिति के अनुसार निर्णय लेकर ही कार्य करना होगा।'' सुनकर क्रोध तो बहुत आया लेकिन चतुर सेठ जी अपना क्रोध छुपाकर बोले, ''ठीक है, कल निकलने से पहले मुझसे मिल लेना।''

''जी, अच्छा!'' कहकर मुनीम जी चले गये। मुनीम जी के जाते ही सेठ जी ने नाई को बुलवाकर अपनी दाढ़ी साफ करवाई। दाढ़ी के बाल सेठानी को देकर उन्होंने उनका छोटा सा सुन्दर तकिया बनाने के लिए कहा। चतुर सेठानी ने दाढ़ी के उन बालों को मखमल के खोल में भरकर सिल दिया। उसके ऊपर सलमे सितारे और मोती टाँककर एक सुन्दर उपहार का रूप दे दिया।

अगली सुबह सारे उपहारों को ऊँटों पर लदवाने के बाद मुनीम जी सेठ जी से मिलने आये। तब सेठ जी ने उन्हें वह तकिया दिया और कहा– ''यह एक विशेष उपहार है, इसे संभालकर रखना और बादशाह सलामत को अपने हाथ से देना।''

''जी अच्छा!'' कहकर मुनीम जी ने तकिया ले लिया।

फतेहपुर सीकरी (अकबर की राजधानी)

पहुँचकर मुनीम जी एक सराय में रुके। अच्छी तरह तैयार होकर बादशाह के दरबार में पहुँचे। सारे उपहार प्रस्तुत करने के बाद अंत में एक चाँदी की थाली में रखकर वह 'विशेष उपहार' बादशाह को सौंपा। प्रसन्न होकर बादशाह सलामत ने उसे खुलवाया। उसमें से बाल निकले देखकर बादशाह आगबबूला हो गये। उनके सभी दरबारी भी भौचक्के रह गये। पलभर में मुनीम जी सारा माजरा समझ गये।

''मेरे साथ ऐसी गुस्ताखी?'' क्रोधित होकर बादशाह बोले।

''गुस्ताखी नहीं जहाँपनाह!'' मुनीम जी ने संयत स्वर में कहा।

''तो फिर यह क्या है?'' बादशाह का क्रोध उत्सुकता में बदल गया।

''हुजूर! ये एक बड़े ही महान् संत की दाढ़ी के बाल हैं। उनके बारे में प्रसिद्ध है, कि यदि उनकी दाढ़ी का एक भी बाल किसी तिजोरी में रख दें तो वह तिजोरी हमेशा धन से भरी रहती है।''

''अच्छा!'' बादशाह चकित हुए और प्रसन्न भी।

''जी आलमपनाह! इसीलिये हमारे सेठ जी ने सोचा कि यदि ये बाल शाही खजाने में रख दिये जायें तो, शाही खजाना हमेशा भरा रहेगा और राज्य में कभी किसी वस्तु की कमी नहीं रहेगी।''

अब तो बादशाह की प्रसन्नता देखते ही बनती थी। उन्होंने अत्यन्त आदर के साथ मुनीम जी को अपने विशिष्ट अतिथिगृह में ठहराया। वापस जाते समय सेठ जी के लिये 'धन्यवाद' के संदेश के साथ बादशाह ने सरोपा भी मुनीम जी के साथ भेजा। मुनीम जी को भी सरोपा दिया और बहुत सारा धन भी दिया।

इधर सेठ जी मान रहे थे कि बादशाह ने क्रोधित होकर मुनीम जी की दुर्दशा अवश्य की होगी। उनको जेल में डाल दिया होगा या हो सकता है, फाँसी ही दे दी हो।

लेकिन जब उन्होंने मुनीम जी को राजी खुशी और सम्पन्न स्थिति में लौटते हुए देखा तो वे हतप्रभ रह गये। सेठजी के पूछने पर मुनीम जी ने उन्हें सारी बातें बताई। अब तो मुनीम जी की प्रत्युत्पन्नमति का लोहा मानना ही पड़ा सेठ जी को।

सच ही है, कि इंसान को कितना भी सिखाया–पढ़ाया जाय, लेकिन अवसर आने पर उसकी स्वयं की बुद्धि ही काम आती है।

– बेंगलूरू (कर्नाटक)

संस्कृति प्रश्नमाला के सही उत्तर

भगवान परशुराम, गाण्डीव, थाईलैण्ड, अरुणाचलम्, चौबीस, सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य, शतपथ ब्राह्मण, रामजीदास गुड़वाला, अमर सिंह राठौड़, इजरायल।

बड़े लोगों के हास्य प्रसंग

भूतपूर्व वित्तमंत्री **श्री मोरारजी देसाई** के सम्मान में मुम्बई की प्रापर्टी आनर्स एसोशिएशन की ओर से एक भोज का आयोजन किया गया। भोजन के बाद श्री मोरारजी के सामने पूर्व से तैयार एसोशिएशन की माँगों की एक लम्बी सूची प्रस्तुत कर दी गई।

मोरारजी ने हँसते हुए उत्तर दिया– ''इतना बढ़िया भोजन करने के बाद यदि मैं आपकी माँगों को स्वीकार करूँ तो भ्रष्टाचारी कहा जाऊँगा और मैं जानता हूँ कि आप यह पसन्द नहीं करेंगे कि आपका वित्तमंत्री भ्रष्टाचारी हो।''

सर सी. पी. रामा स्वामी प्रसिद्ध विद्वान, सफल प्रशासक और विख्यात शिक्षाशास्त्री थे। यह घटना उन दिनों की है जब वे चेन्नई में वकालत में बड़ी कीर्ति अर्जित कर चुके थे। एक बार सरकार की ओर से उन्हें पत्र मिला जिसमें पूछा गया था कि क्या वे मद्रास उच्च न्यायालय के न्यायाधीश बनना स्वीकार करेंगे।

सर सी. सी. रामा स्वामी ने संक्षिप्त उत्तर दिया– ''मैं बकवास सुनने की अपेक्षा करना अधिक पसंद करता हूँ।''

राहुल ने राजू के बारे में इंस्पेक्टर से बताया– 'यह मेरे दादा के पुत्र के ससुर की पुत्र के मामा का भांजा है।' राहुल और राजू का आपस में क्या संबंध है।

उत्तर– राजू, राहुल का मामा है।

सूर्या फाउण्डेशन द्वारा विवेकानंद जयंती के उपलक्ष्य में प्रेरक कार्यक्रम

स्वामी विवेकानंद युवाओं के प्रेरणास्रोत के रूप में देश में ही नहीं, अपितु दुनियाभर में जाने जाते हैं। स्वामीजी को आदर्श मानकर सूर्या फाउण्डेशन देशभर में युवा विकास के अनेकानेक कार्यक्रमों का संचालन प्रतिवर्ष करता रहता है। इसी क्रम में दिनाँक १० से १२ जनवरी २०२१ राष्ट्रीय युवा दिवस पर कई प्रकार की ऑनलाइन प्रतियोगिताओं और सेवाकार्यों का भी आयोजन किया गया, जिसमें देशभर के १०,००० युवाओं ने भाग लिया।

इन कार्यक्रमों में भाषण, चित्रकला, प्रश्नोत्तरी के साथ–साथ बनो विवेकानंद इन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

बनो विवेकानंद प्रतियोगिता में विवेकानंद जी की वेशभूषा पहनकर उनके शक्तिदायी और प्रेरक विचार विद्यार्थियों ने बोले। चित्रकला प्रतियोगिता में विद्यार्थियों द्वारा स्वामी जी के जीवन प्रसंग पर आधारित चित्र बनाए गए। भाषण प्रतियोगिता में भी लोगों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया। स्वामी जी की जीवनी और उनके विचार, संदेशों को विद्यार्थी ठीक से अध्ययन एवं अनुसरण करें, इसके लिए स्वामी जी के जीवन पर आधारित प्रश्नोत्तरी का भी आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में सभी कोई न कोई सेवा कार्य करें, इस प्रकार का आग्रह किया गया था। जिससे स्वामी विवेकानंद जी के उपदेश **'नर सेवा नारायण सेवा'** को सार्थक किया जा सके। यह प्रयोग भी काफी सफल रहा।

युवा दिवस के इस कार्यक्रम में कई गणमान्य महानुभावों पद्मश्री जयप्रकाश, डॉ. संबित पात्रा, डॉ. चिन्मय पंड्या, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, श्री मुकुल कानिटकर, भारतीय शिक्षण मंडल, स्वामी मुनि वत्सल दास, अक्षरधाम, दिल्ली ने अपने शुभकामना संदेश भेजे।

प्रतियोगिताओं के परिणामों की घोषणा दिनाँक २३ जनवरी को की जाएगी। जिसमें सभी प्रतिभागियों को प्रमाण–पत्र दिया जाएगा और विजेताओं को पुरस्कृत किया जाएगा।

छः अंगुल मुस्कान

पति (पत्नी से) :– आज सब्जी में नमक अधिक लग रहा है।

पत्नी :– नमक उतना ही है,सब्जी थोड़ी कम थी।

– रमेश चौहान, जोधपुर

नए अध्यापक में ने कक्षा में पूछा :– एक महान वैज्ञानिक का नाम बताओ?

लड़का :– आलिया भट्ट।

अध्यापक (छड़ी हाथ में लेकर) :– यह सीखे हो?

दूसरा :– ये तोतला है गुरुजी, आर्यभट्ट बोल रहा है।

– सीमा कुमारी (पटना)

पति :– तंग आ गया हूँ रोज पालक की सब्जी खाते हुए।

पत्नी :– पालक में आयरन होता है।

पति :– मुझे क्या सरिया बनाओगी?

– रोहित सक्सेना, इन्दौर (म. प्र.)

प्लेटफार्म पर सामान के ढ़ेर के साथ बैठा देख कुली ने पूछा– मैडम कुली चाहिए?

महिला :– नहीं, मेरे पति हैं।

– राकेश गुप्ता, (नई दिल्ली)

गीदड़ की सरदारी

– नफे सिंह कादयान

सिंधु वन में एक गीदड़ रहता था। जंगल में मटरगस्ती करते हुए उसे एक सेह का कांटा मिल गया। उसने काँटे का छल्ला बना अपने कान में डाल लिया। छल्ला डाल उसने तालाब के पानी में अपना चेहरा देखा तो वह फूल कर कुप्पा हो गया।

''अब मैं सभी जानवरों से विशेष हो गया हूँ।'' गीदड़ साफ पानी में अपना चेहरा देख बड़बड़ाया। उसने जानवरों के पास पहुँच घोषणा कर दिया कि मैंने सरदारी का छल्ला पहन लिया है इसलिए आज से मुझे सरदार गीदड़ जी कह कर बुलाया जाए। सभी जानवर मेरे आदेश का पालन करें।

गीदड़ के सरदार बनते ही उसके चारों ओर चापलूसों का जमावड़ा एकत्र हो गया। मजाक वे उसे नये–नये सुझाव देने लगे– ''सरदार साहब के लिए एक मंच का निर्माण किया जाए।'' गधा ढेंचू ढेंचू करता हुआ बोला।

''इसके गले में मेरे खाए जानवरों की हड्डियों का हार पहनाओ, तभी यह खास सरदार बनेगा।'' शेर गुर्राते हुए बोला

''इसकी पूँछ पर कांटेदार झाड़ी बाँध दो, बड़ी सुन्दर लगेगी। सुन्दर पूँछ ही असली सरदारी का प्रतीक होती है।'' लोमड़ी नटखटपन से मुस्कराते हुए बोली।

एक बड़े पीपल तने के पास पत्थर एकत्र कर जानवरों द्वारा सरदार साहेब के लिये मंच बनाया गया। फिर उसको उन्होंने भैंसों के गोबर से लीप दिया। हाथी ने सूंड से एक बड़ा पत्थर उठा मंच के बीच रख दिया। उस पत्थर पर बड़ी शान के साथ सरदार गीदड़ जी विराजमान हो गए।

सबसे पहले शेर ने उसके गले हड्डियों का हार डाल सरदार बनने पर उसका स्वागत किया। सरदार चिन्ह के रूप में लोमड़ी ने एक सूखी काँटेदार झाड़ी गीदड़ की पूँछ से बाँध दी। वहाँ उपस्थित सभी जंगलजन सरदार गीदड़ जी की शान में गीत गाने लगे–

''कान में छल्ला, गले में हार,
सरदार का सजा दरबार,
गीदड़ जी पर हमें है नाज,
करके रहेगा हमरे काज।''

अपनी तारीफ में गीत सुन गीदड़ फूला नहीं समा रहा था। वह सभी जानवरों को आदेश देता हुआ बोला– ''सभी जंगलजन आकर मुझे बारी–बारी प्रणाम करें और जोर से जयकारा लगाते हुए बोलें–

''सोने का तेरा मंच बना है ऊपर सजा सिंहासन,
हम सब तेरा हुक्म बजाएँ, जंगल में तेरा शासन।''

मंच के सामने आकर हर एक जानवर जयकारा लगाने लगा। सबसे पहले शेर ने मंच पर बैठे गीदड़ को प्रणाम करते हुए नारा लगाया–

''सोने का तेरा मंच बना है ऊपर सजा सिंहासन,
हम सब तेरा हुक्म बजाएँ, जंगल में तेरा शासन।''

फिर भेड़िये ने आकर प्रणाम किया। उसके बाद गधे, भैंसे, चीते, सुअर ने उसे प्रणाम किया और जंगल में चले गए। आखिर में लोमड़ी रह गई। वह गीदड़ के मंच से काफी दूर खड़ी मुस्करा रही थी। उसे मंच से दूर खड़ा देख सरदार साहेब गुस्से से लाल–पीला हो गुर्राया– ''पिद्दी लोमड़ी, तेरी ये मजाल जो मेरी हुक्म अदूली करती है। चल मेरे पास आ मुझे झुक कर प्रणाम कर और अब तू दो बार यह नारा लगाएगी, सोने का तेरा मंच बना है ऊपर सजा सिंहासन, हम सब तेरा हुक्म बजाएं, जंगल में तेरा शासन।''

शरारती लोमड़ी मंच से थोड़ा और दूर जा गीदड़ पर कटाक्ष करती हुई बोली–

''पत्थर का तेरा मंच बना है, ऊपर सना है गोबर,
हम सब तुझको पत्थर मारें, लगता है तू जोकर।''

यह कह लोमड़ी भागने लगी तो गीदड़ उसे मारने दौड़ पड़ा। गीदड़ को पीछा करते देख लोमड़ी झट से पेड़ पर चढ़ गई।

सरदार गीदड़ जी का अपमान हो गया था इसलिए वह पेड़ के नीचे बैठता हुआ ऊपर देख लोमड़ी से बोला–

''मैं हूँ सरदार जम्बू,
तेरे पेड़ नीचे मैंने लगा
लिया तम्बू,
कभी तो नीचे उतरेगी पिद्दी
लोमड़ी,
फिर खाल उधेड़ बनाऊँगा
तेरा बम्बू।''

''वो देख शहर की तरफ से गीदड़मार अपने शिकारी कुत्तों के साथ चले आ रहे हैं। वो उखाड़ेंगे तेरा तम्बू और खींच टांग बनाएंगे तुझे लम्बू। सरदार साहब जरा संभल के भागना, ये कुत्ते तेरी सरदारी फाड़ेंगे।'' पेड़ के शिखर पर बैठी लोमड़ी यह कह खिलखिला कर हँसने लगी।

गीदड़ मार.... शिकारी कुत्ते..? अच्छा तो पेड़ से नीचे उतर कर भागने की योजना बना रही हो, लेकिन आज मैं तेरी चाल में नहीं आने वाला। गीदड़ का वाक्य अभी पूरा भी नहीं हुआ तभी उसे पेड़ों के झुरमुट के पीछे से चार–पाँच खुँखार कुत्ते आते दिखाई दिए। कुत्तों को देख डर से उसकी घिग्गी बंद गई। उनसे बचने के लिये वह अपनी मांद की ओर सर पर पाँव रख भागा।

गीदड़ को पूँछ से बंधी झाड़ी के कारण भागने में भारी परेशानी हो रही थी। झाड़ी झाड़–झंखारों में इधर–उधर उलझती जा रही थी। इस बीच गीदड़ मारों के शिकारी कुत्ते उसके सर पर पहुँच गए। कुत्तों को देख वह प्राण बचाकर भागा। इससे पहले कि वह उसे पकड़ पाते उसने अपनी मांद में छलांग लगा दी। वह तो अन्दर समा गया मगर मांद के मुहाने पर झाड़ी अटक गई।

''स्वामी जल्दी से अन्दर आ जाओ नहीं तो कुत्ते तुम्हें फाड़ देंगे।'' गीदड़ की गीदड़ी ने अन्दर से आवाज लगाई।

गीदड़ मिमियाया–

''अन्दर कैसे आऊँ भाग्यवान!
दिन बचे मेरे थोड़े,
लोमड़ी ने कांटे जोड़े,
ये सरदारी पीछा ना छोड़े।''

तभी पीछे से आकर कुत्तों ने झाड़ी मुँह में पकड़ झटका मारा तो पूँछ उखड़ गई। अंदर आ गीदड़ रोते हुए बोला–

''चापलूसों ने मूर्ख बनाया, सरदारी दे दी भारी,
जड़ से मेरी दूम उखाड़ी, कर गए मक्कारी।''

– अम्बाला (हरियाणा)

आओ ऐसे बनें

संतोष धनी : लाजपतराय

– मदन गोपाल सिंहल

शाला के कुछ विद्यार्थियों ने शहर से बाहर एक पहाड़ी स्थान पर घूमने जाने की योजना बनाई थी। पहिले ही दिन निश्चय हो गया था कि सभी विद्यार्थी अपने–अपने घरों से खाने के लिये कुछ न कुछ भोजन अपने साथ लेकर चलेंगे।

वह विद्यार्थी घर आया तो उसने भी अपनी माँ से अगले दिन प्रात:काल कुछ खाना बना देने के लिये कहा। किन्तु घर में कुछ भी नहीं था–न सामान ही और न सामान खरीदने के लिये पैसे ही। हाँ, कुछ पिण्ड खजूर अवश्य थे किन्तु केवल पिण्ड खजूर लेकर ही जाना तो ठीक नहीं था।

बालक ने माँ की दुविधा को जान लिया। उसने मन ही मन घूमने के लिये न जाने का ही निश्चय किया।

पिता आये तो माँ ने उनसे कहा, किन्तु संयोग की बात कि पिता की जेब भी खाली थी। वे बालक का दिल नहीं तोड़ना चाहते थे अत: उन्होंने पड़ौसी से कुछ पैसे माँगकर बालक के ले जाने के लिये कुछ भोजन की व्यवस्था करने का निश्चय किया।

वह पड़ौसी के यहाँ चले तो बालक परिस्थिति को समझ गया। उसने दौड़कर पिता की बाँह पकड़ ली।

''आप कहाँ जा रहे हैं लालाजी?'' उसने पूछा।

''पड़ौसी से कुछ पैसे माँगने के लिये। घर में कुछ बना नहीं है अत: तुम्हारे लिये ही प्रबंध कर रहा हूँ बेटा!'' उन्होंने उत्तर दिया।

''नहीं, नहीं यह उचित नहीं है। मैं साथियों के साथ घूमने नहीं जाऊँगा और जाना भी होगा तो घर में रखे हुये पिण्ड खजूर ही लेकर चला जाऊँगा। आप कहीं नहीं जाइये। कर्ज लेना ठीक नहीं होता।'' बालक ने कहा।

और पिता उस १०–१२ वर्ष के बच्चे के मुँह की ओर देखते ही रह गये। उन्होंने उसे उठाया और अपनी छाती से लगा लिया। वह कुछ बोल न सके। जानते हो यह बालक कौन था जो छोटा सा होते हुये भी अपने घर वालों के लिये किसी भी प्रकार की चिंता का कारण बनना नहीं चाहता था? इस बालक का नाम था लाजपत, जो बड़ा होकर पंजाब केसरी लाला लाजपतराय के नाम से विख्यात हुआ।

देवपुत्र

के स्वामित्व का विवरण

फार्म-४ (नियम-८)

प्रकाशन स्थान	इन्दौर
प्रकाशन अवधि	मासिक
मुद्रक का नाम	कृष्ण कुमार अष्ठाना
(क्या भारत का नागरिक है) (यदि विदेशी है तो मूल देश)	हाँ
पता	४०, संवाद नगर, इन्दौर
प्रकाशक का नाम	कृष्ण कुमार अष्ठाना
(क्या भारत का नागरिक है) (यदि विदेशी है तो मूल देश)	हाँ
पता	४०, संवाद नगर, इन्दौर
उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार –पत्र के स्वामी हों तथा जो एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	सरस्वती बाल कल्याण न्यास

मैं कृष्ण कुमार अष्ठाना एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

(कृष्ण कुमार अष्ठाना)
प्रकाशक के हस्ताक्षर

कविता

होली की बारात

– डॉ. तारादत्त 'निर्विरोध'

सड़कों बाजारों गलियों में,
धूम मची है टोली की।
कोई एक बना है दूल्हा
बैठ गधे पर आया,
लाल–गुलाबी–नीले–पीले
बाराती संग लाया।
बिना बैण्ड के हँसती–गाती,
बारात आ रही टोली की।
एक पाँव से कोई नाचे
और दूसरा गाए,
कोई पीटे आज कनस्तर
कोई चंग बजाए।
कोई नहीं सोचता क्षण भर
कड़वी–मीठी बोली की।
कोई रंगता अनजाने को
और गले भी मिलता,
मगर–दूसरा पीछे से आ
मुख पर गुलाल मलता।
सबके मन में बात समाई,
मस्ती और ठिठोली की।

– जयपुर (राजस्थान)

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२१-२०२३ | आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५

प्रकाशन तिथि २०/०२/२०२१ | प्रेषण तिथि ३०/०२/२०२१ | प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

संस्कार संजोना अच्छी बात है संस्कार फैलाना और अच्छी बात।

वार्षिक शुल्क 180/-

आजीवन शुल्क 1400/-

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

अब और आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

देवपुत्र अब Jio Net पर भी !

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स, सांवेर रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित

प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना